व्याकरण सुमन

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप

5

अशोक कुमार गुप्ता
एम० ए०

BRILLIANT BOOKS

विषय-सूची

1.	भाषा और व्याकरण Language and Grammar	...	03
2.	वर्ण-विचार Phonology	...	06
3.	शब्द-विचार Morphology	...	09
4.	संज्ञा Noun	...	12
5.	संज्ञा के विकार : लिंग, वचन और कारक Declension of Noun : Gender, Number and Case	...	16
6.	सर्वनाम Pronoun	...	27
7.	विशेषण Adjective	...	31
8.	क्रिया Verb	...	36
9.	काल Tense	...	40
10.	अव्यय/अविकारी शब्द Indeclinable Words	...	43
11.	विराम-चिह्न Punctuation Marks	...	50
12.	वाक्य-विचार Syntax	...	53
13.	शब्द-भण्डार Vocabulary	...	56
14.	मुहावरे Idioms	...	67
15.	संवाद-लेखन Dialogue-Writing	...	70
16.	कहानी-लेखन Story-Writing	...	72
17.	पत्र-लेखन Letter-Writing	...	77
18.	अनुच्छेद-लेखन Paragraph-Writing	...	80
19.	निबन्ध-लेखन Essay-Writing	...	83
20.	अपठित गद्यांश Unseen Passage	...	88
▶	Periodic Test : Term-1	...	91
●	Half-Yearly Test Paper	...	92
▶	Periodic Test : Term-2	...	94
●	Annual Test Paper	...	95

BRILLIANT BOOKS®

A-9, झिलमिल इण्डस्ट्रियल एरिया,
दिलशाद गार्डन मेट्रो स्टेशन के पीछे,
दिल्ली-110 095
email : info@brilliantbooks.co.in
www.brilliantbooks.co.in
Tollfree : 1800 270 1317

© प्रकाशकाधीन

कला कार्य
मलय चक्रवर्ती

प्रकाशक एवं मुद्रक
विद्या प्रकाशन मन्दिर प्रा० लि०

इस पुस्तक को यथासम्भव शुद्ध एवं त्रुटिरहित रूप में प्रस्तुत करने का प्रत्येक सम्भव प्रयास किया गया है; फिर भी इसमें कोई कमी अथवा त्रुटि रह गयी हो तो उससे कारित क्षति एवं सन्ताप के लिए लेखक, सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का कोई दायित्व नहीं होगा। प्राप्त सुझावों अथवा त्रुटियों का समायोजन आगामी संस्करण में कर दिया जायेगा।

1

भाषा और व्याकरण
Language and Grammar

भाषा

मनुष्य का यह स्वभाव है कि वह अपने मन के भावों और विचारों का आदान-प्रदान करता है। जब भाषा नहीं थी तब मनुष्य संकेतों द्वारा इन्हें प्रकट करता था। ये संकेत कई तरह से दिए जाते हैं—इशारों से, तरह-तरह के चित्र बनाकर। संकेत द्वारा मन के सभी भाव और विचार प्रकट नहीं किए जा सकते। धीरे-धीरे वह विचारों का आदान-प्रदान आपस में बातचीत करके करने लगा। बोलकर/सुनकर विचारों के आदान-प्रदान की यही प्रक्रिया समय बीतने पर बोलने की भाषा बनी। भाषा का यही मूल रूप मौखिक भाषा कहलाता है। इस तरह भाषा का विकास होता चला गया।

मौखिक (उच्चरित) शब्दों की ध्वनियों (आवाज़ों) को निश्चित चिह्न दिए गए। इससे भाषा का लिखित रूप बना। इसे पढ़कर बात को समझा जा सकता है।

इस प्रकार, भाषा वह साधन है जिसके द्वारा हम लिखकर, पढ़कर, बोलकर या सुनकर अपने भावों या विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।

भाषा के रूप

भाषा के दो रूप होते हैं—

(1) मौखिक रूप और (2) लिखित रूप।

भारत के स्वतन्त्रता-दिवस के अवसर पर देश के प्रधानमन्त्री ने दिल्ली के लालकिले पर तिरंगा झण्डा फहराया और लोगों को बताया कि देश की उन्नति के लिए मिल-जुलकर काम करना चाहिए।

प्रधानमन्त्री ने बोलकर अपने विचार बताए। उपस्थित लोगों ने सुनकर उनके विचारों को जाना। बोलना और सुनना भाषा के मौखिक रूप हैं।

बहुत-से लोगों ने अखबारों में उनके भाषण को पढ़कर उनके विचारों को जाना। अखबारों में प्रधानमन्त्री का भाषण छपा हुआ अर्थात् लिखित रूप में था। इस प्रकार, लिखना और पढ़ना भाषा के लिखित रूप हैं।

भारत की राजभाषा हिन्दी है। भारत के भिन्न-भिन्न प्रान्तों में भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोली जाती हैं। इसलिए भारतीय संविधान में हिन्दी के अलावा असमिया, ओड़िया, बांग्ला, उर्दू, गुजराती, मराठी, तेलुगु, तमिल, कन्नड़, मलयालम, कश्मीरी, पंजाबी, संस्कृत, सिन्धी, नेपाली, मणिपुरी, कोंकणी, डोगरी, बोडो, मैथिली और संथाली भाषाओं को मान्यता दी गई है। इन सभी भाषाओं के साथ-साथ हिन्दी पूरे भारतवर्ष में बोली और समझी जाती है।

बोली

किसी विशेष (सीमित) क्षेत्र में प्रयोग की जाने वाली भाषा को बोली कहते हैं। उत्तर प्रदेश में ब्रज क्षेत्र में बोली जाने वाली बोली 'ब्रज' और अवध क्षेत्र में बोली जाने वाली बोली 'अवधी' कहलाती है। ये हिन्दी की बोलियाँ हैं। 'कन्नौजी' भी हिन्दी की बोली है।

लिपि

भाषा के लिखित रूप को प्रकट करने के लिए कुछ ध्वनि-चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। इन चिह्नों को लिपि कहते हैं। हर एक भाषा की अपनी एक अलग लिपि होती है। हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी है। हमारे देश में अंग्रेज़ी और उर्दू भाषाओं का भी खूब प्रयोग होता है। अंग्रेज़ी 'रोमन' लिपि में , उर्दू, 'फ़ारसी' लिपि में और पंजाबी 'गुरुमुखी' लिपि में लिखी जाती है। देवनागरी, रोमन व गुरुमुखी लिपि बायीं ओर से दायीं ओर लिखी जाती हैं, जबकि फ़ारसी लिपि दायीं ओर से बायीं ओर लिखी जाती है।

व्याकरण

भाषा का प्रयोग करते समय उसके शुद्ध रूप का ध्यान रखना चाहिए। भाषा का शुद्ध ज्ञान व्याकरण की सहायता से होता है। व्याकरण ही वह शास्त्र है जो हमें भाषा को शुद्ध रूप से बोलना, सुनना, लिखना और पढ़ना सिखाता है। इस प्रकार भाषा का व्याकरण के साथ गहरा सम्बन्ध है।

व्याकरण के अनुसार भाषा के तीन अंग होते हैं—(क) वर्ण, (ख) शब्द और (ग) वाक्य।

इन अंगों पर आगे क्रम से विचार किया जाएगा।

1. सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) भारत की राजभाषा कौन-सी है?
(i) अंग्रेज़ी (ii) हिन्दी (iii) संस्कृत

(ख) हिन्दी भाषा किस लिपि में लिखी जाती है?
(i) रोमन (ii) फ़ारसी (iii) देवनागरी

(ग) भाषा का शुद्ध ज्ञान किसकी सहायता से होता है?
(i) लिपि (ii) बोली (iii) व्याकरण

2. उचित शब्दों से वाक्यों की पूर्ति कीजिए—

(क) वाद-विवाद भाषा का ..... रूप है।
(ख) हमारी राजभाषा ..... है।
(ग) ..... की सहायता से हम शुद्ध भाषा बोलना व लिखना सीखते हैं।
(घ) जब हम लिखकर भाषा का प्रयोग करते हैं तो वह भाषा का ..... रूप होता है।
(ङ) ..... लिपि दायीं ओर से बायीं ओर लिखी जाती है।

3. कथन पढ़कर सही (✓) और गलत (✗) का चिह्न लगाइए—

(क) भाषा के द्वारा बोलकर और लिखकर विचार प्रकट कर सकते हैं।
(ख) बातचीत भाषा का लिखित रूप है।
(ग) व्याकरण भाषा का शुद्ध प्रयोग सिखाता है।
(घ) संसार में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं।
(ङ) भारत के विभिन्न प्रान्तों के लोग एक ही भाषा बोलते हैं।

4. निम्नलिखित भाषाओं की लिपियों के नाम लिखिए—

गुजराती	उर्दू	अंग्रेज़ी .....
पंजाबी	हिन्दी	नेपाली .....

5. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) भाषा किसे कहते हैं?
(ख) लिपि की आवश्यकता क्यों पड़ी?
(ग) व्याकरण किसे कहते हैं?
(घ) भाषा के तीन अंग कौन-से हैं?

2 वर्ण-विचार

Phonology

हर ध्वनि को लिखने के लिए एक निश्चित चिह्न होता है। ध्वनि का बोला और लिखा गया रूप वर्ण कहलाता है। यह भाषा की सबसे छोटी इकाई है। वर्णों का व्यवस्थित समूह वर्णमाला कहलाता है। इन्हीं वर्णों के सार्थक मेल से   बनते हैं और शब्दों से वाक्य बनते हैं जो पूरा अर्थ देते हैं।

हिन्दी की वर्णमाला

वर्ण मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं—1. स्वर (Vowels) और 2. व्यंजन (Consonants)।

1. स्वर

स्वरों का उच्चारण स्वतन्त्र रूप से किया जाता है। इन्हें बोलते समय मुख से हवा बिना किसी रुकावट के निकलती है। हिन्दी भाषा में इनकी संख्या ग्यारह है—

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

हिन्दी में स्वर का प्रयोग दो प्रकार से होता है—

1. अपने मूल रूप में— अ, आ, इ, ई आदि।
2. व्यंजन के साथ मात्रा के रूप में— क् + आ = का, क् + इ = कि आदि।

इस बात को तालिका द्वारा सरलता से स्पष्ट किया जा सकता है—

स्वर	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ
मात्रा	—	ा	ि	ी	ु	ू	ृ	े	ै	ो	ौ
मात्रायुक्त वर्ण	प	पा	पि	पी	पु	पू	पृ	पे	पै	पो	पौ

- 'अ' का मात्रा-चिह्न नहीं होता।

स्वरों के बाद इन वर्णों को स्थान दिया जाता है जिन्हें अयोगवाह कहते हैं— अं अः अँ

- अं का चिह्न बिन्दु (ं) है। इसे अनुस्वार कहते हैं। इसे नाक की सहायता से बोला जाता है; जैसे—पंखा, बंद, डंडा आदि।
- अः—यह विसर्ग-चिह्न (:) है। यह व्यंजन के बाद लगता है; जैसे—प्रातः, अतः आदि। विसर्ग वाले शब्दों को बोलते समय 'ह्' की हलकी आवाज़ आती है।
- अँ—यह अनुनासिक है। इसका चिह्न चन्द्रबिन्दु (ँ) है, परन्तु यदि शिरोरेखा पर मात्रा हो तो केवल बिंदु लगाया जाता है; जैसे—फँसना, फेंटना, साँप, खींचना, गोंद, औंधा आदि।

2. व्यंजन

व्यंजनों का उच्चारण स्वरों की सहायता से किया जाता है। इनका उच्चारण करते समय हवा मुख के भीतर कंठ, तालु, मूर्धा, दंत व ओष्ठ से स्पर्श करती है। हिन्दी भाषा में इनकी संख्या तेंतीस है—

क	ख	ग	घ	ङ	(कवर्ग)
च	छ	ज	झ	ञ	(चवर्ग)
ट	ठ	ड	ढ	ण	(टवर्ग)
त	थ	द	ध	न	(तवर्ग)
प	फ	ब	भ	म	(पवर्ग)
य	र	ल	व		
श	ष	स	ह		

- 'ड़' और 'ढ़' अतिरिक्त व्यंजन माने जाते हैं। इनका उच्चारण 'ड' और 'ढ' से भिन्न होता है। इनका भेद नीचे दिए उदाहरण से स्पष्ट हो जाता है—

ड — डाल, डाकू, डॉक्टर, डायरी, डोर

ड़ — लड़का, लड़की, लड़ाकू, लड़ाई, पेड़, बड़ा

ढ — ढाल, ढकना, ढक्कन, ढोलक, ढोल

ढ़ — पढ़ना, चढ़ना, गढ़ना, पढ़ाई, पढ़ाकू, बूढ़ा

व्यंजनों के साथ 'अ' की ध्वनि मिली होती है; जैसे—

क् + अ = क, ख् + अ = ख, च् + अ = च आदि।

'अ' स्वर से रहित व्यंजन के नीचे हल चिह्न (्) लगाकर स्पष्ट किया जाता है।

संयुक्त व्यंजन—दो भिन्न व्यंजनों के बीच स्वर न रहने से जब वे आपस में मिलाकर लिखे या बोले जाते हैं, तो वे संयुक्त व्यंजन कहलाते हैं; जैसे—

क् + ष = क्ष (भिक्षा, क्षमा)

ज् + ञ = ज्ञ (संज्ञा, विज्ञान)

त् + र = त्र (त्रिशूल, त्रिभुज)

श् + र = श्र (श्रमिक, विश्राम)

संयुक्ताक्षर—दो अलग-अलग व्यंजनों के मिलने से बने अक्षर संयुक्ताक्षर कहलाते हैं; जैसे—

च् + छ = च्छ (स्वच्छ, अच्छा)

प् + य = प्य (प्यारा, प्यास)

क् + य = क्य (क्यारी, क्योंकि)

द् + य = द्य (विद्या, विद्यार्थी)

द्वित्व व्यंजन—दो समान या एक जैसे व्यंजनों से मिलकर बने व्यंजनों को द्वित्व व्यंजन कहते हैं; जैसे—

च् + च = च्च (कच्चा, बच्चा)

त् + त = त्त (कुत्ता, पत्ता)

म् + म = म्म (चम्मच, अम्मा)

ट् + ट = ट्ट (मिट्टी, पट्टी)

(घ) विदेशी शब्द—दूसरे देशों की भाषाओं से हिन्दी में आए शब्द 'विदेशी' शब्द कहलाते हैं; जैसे—

अरबी-फ़ारसी से — फ़कीर, औरत, फौज़, कारखाना, बाग आदि।

अंग्रेज़ी से — अंकल, स्कूल, स्टेशन, रेडियो, डॉक्टर आदि।

3. रचना/बनावट के आधार पर शब्द-भेद

रचना/बनावट के आधार पर शब्द तीन प्रकार के होते हैं—

(क) रूढ़ शब्द—ये ऐसे शब्द होते हैं जिनके टुकड़े नहीं किए जा सकते। यदि इनके टुकड़े करके देखें भी तो इनका कोई अर्थ नहीं निकलता; जैसे—घर, गुरु, हाथी, विद्या आदि।

(ख) यौगिक शब्द—दो शब्दों के योग से बने ऐसे शब्द जो सार्थक होते हैं—यौगिक शब्द कहलाते हैं। इनके टुकड़े किए जा सकते हैं; जैसे—विद्या + आलय = विद्यालय; भाव + अर्थ = भावार्थ।

(ग) योगरूढ़ शब्द—ये ऐसे शब्द होते हैं जिनके टुकड़े तो हो सकते हैं, परन्तु उन टुकड़ों का सीधा अर्थ न निकलकर कोई विशेष अर्थ निकलता है; जैसे—

नीला + कण्ठ = नीलकण्ठ (नीले कण्ठ वाला अर्थात् शिव)

पंक + ज = पंकज (पंक = कीचड़ में, ज = जन्मा अर्थात् कमल)

गज + आनन = गजानन (गज = हाथी के समान, आनन = मुख वाला अर्थात् गणेश)

4. प्रयोग के आधार पर शब्द-भेद

प्रयोग के आधार पर शब्द दो प्रकार के होते हैं—

(क) विकारी शब्द—इनके रूप में लिंग, वचन, पुरुष तथा काल के कारण परिवर्तन आ जाता है। ये चार प्रकार के होते हैं—

संज्ञा — लड़का से लड़के, लड़कों; लड़की से लड़कियाँ, लड़कियों आदि।

सर्वनाम — वह, वे, उसे, उन्हें, उसका, उनका आदि।

विशेषण — छोटा, छोटी, छोटे आदि।

क्रिया — जाता है, गया, जाएगा, जाए, जाओ आदि।

(ख) अविकारी शब्द—इनके रूप में कभी भी, किसी भी स्थिति में कोई भी बदलाव नहीं आता। ये सदा एक-से रहते हैं। इन्हें अव्यय भी कहा जाता है। ये भी चार प्रकार के होते हैं—

क्रियाविशेषण — यहाँ, वहाँ, ऊपर, अभी, धीरे-धीरे आदि।

सम्बन्धबोधक — के साथ, के बाद, से पहले, की ओर आदि।

समुच्चयबोधक — और, तथा, एवं, परन्तु, क्योंकि, ताकि, अथवा, अन्यथा आदि।

विस्मयादिबोधक — हाय!, वाह-वाह!, अरे!, छि:-छि:! आदि।

1. सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) 'तद्भव' किस आधार पर किया गया शब्द-भेद है?

(i) रचना/बनावट ◯ (ii) उत्पत्ति ◯ (iii) प्रयोग ◯

(ख) प्रयोग के आधार पर शब्दों को कितने भागों में बाँटा जा सकता है?

(i) चार ◯ (ii) छः ◯ (iii) आठ ◯

(ग) 'पुस्तकालय' किस प्रकार का शब्द है?

(i) रूढ़ शब्द ◯ (ii) यौगिक शब्द ◯ (iii) योगरूढ़ शब्द ◯

2. नीचे कुछ विदेशी शब्द दिए जा रहे हैं, उन्हें उनकी मूल भाषाओं के अन्तर्गत लिखिए—

स्कूल फ़कीर फ़ौज स्टेशन रेडियो औरत डॉक्टर

अरबी-फ़ारसी : .....

अंग्रेज़ी : .....

3. नीचे दिए गए शब्दों के तत्सम रूप लिखिए—

गाँव	.....	चाँद	.....
पंछी	.....	दही	.....
सच	.....	सोना	.....

4. स्तम्भ 'क' में दिए गए शब्दों को स्तम्भ 'ख' में दिए गए शब्द-भेदों के साथ मिलाइए—

स्तम्भ 'क'	स्तम्भ 'ख'
नाक	योगरूढ़
आश्रय	देशज
पगड़ी	यौगिक
सूर्योदय	तद्भव
दशानन	तत्सम

5. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) व्याकरण के अनुसार शब्द किसे माना जाता है? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

(ख) शब्दों का वर्गीकरण किन आधारों पर किया जाता है?

(ग) विकारी और अविकारी शब्दों में क्या भेद होता है? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

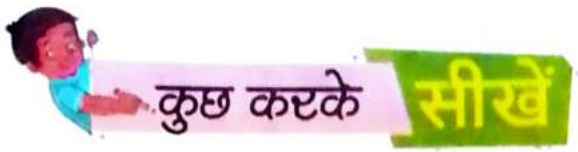

1. सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) 'तद्भव' किस आधार पर किया गया शब्द-भेद है?

(i) रचना/बनावट ◯ (ii) उत्पत्ति ◯ (iii) प्रयोग ◯

(ख) प्रयोग के आधार पर शब्दों को कितने भागों में बाँटा जा सकता है?

(i) चार ◯ (ii) छः ◯ (iii) आठ ◯

(ग) 'पुस्तकालय' किस प्रकार का शब्द है?

(i) रूढ़ शब्द ◯ (ii) यौगिक शब्द ◯ (iii) योगरूढ़ शब्द ◯

2. नीचे कुछ विदेशी शब्द दिए जा रहे हैं, उन्हें उनकी मूल भाषाओं के अन्तर्गत लिखिए—

स्कूल फ़कीर फ़ौज स्टेशन रेडियो औरत डॉक्टर

अरबी-फ़ारसी : .....

अंग्रेज़ी : .....

3. नीचे दिए गए शब्दों के तत्सम रूप लिखिए—

गाँव	.....	चाँद	.....
पंछी	.....	दही	.....
सच	.....	सोना	.....

4. स्तम्भ 'क' में दिए गए शब्दों को स्तम्भ 'ख' में दिए गए शब्द-भेदों के साथ मिलाइए—

स्तम्भ 'क'	स्तम्भ 'ख'
नाक	योगरूढ़
आश्रय	देशज
पगड़ी	यौगिक
सूर्योदय	तद्भव
दशानन	तत्सम

5. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) व्याकरण के अनुसार शब्द किसे माना जाता है? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

(ख) शब्दों का वर्गीकरण किन आधारों पर किया जाता है?

(ग) विकारी और अविकारी शब्दों में क्या भेद होता है? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

4 संज्ञा
Noun

नीचे दिए गए चित्र को ध्यानपूर्वक देखिए—

यह एक मेले का दृश्य है। इसमें बहुत-से व्यक्ति, प्राणी और वस्तुएँ हैं। उन सभी के भी नाम हैं। व्याकरण में नाम शब्द संज्ञा कहलाते हैं।

अब आप जान गए होंगे कि किसी भी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, प्राणी या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं।

संज्ञा के भेद

संज्ञा के निम्नलिखित भेद होते हैं—

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा—जिन शब्दों से किसी विशेष व्यक्ति, किसी विशेष स्थान या किसी विशेष वस्तु का पता चलता है, उन्हें व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

महात्मा गांधी, ताजमहल, रामायण आदि शब्द व्यक्तिवाचक संज्ञा हैं, क्योंकि इनसे विशेष व्यक्ति, विशेष स्थान और विशेष वस्तु का पता चल रहा है।

रामायण

2. जातिवाचक संज्ञा—जिन शब्दों से एक ही प्रकार के सभी प्राणियों या वस्तुओं का पता चलता है, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

दिए गए शब्द—कवि, पेड़, फल जातिवाचक संज्ञा हैं, क्योंकि इनसे एक ही प्रकार के प्राणियों और वस्तुओं का पता चल रहा है।

कवि

फल

3. भाववाचक संज्ञा—जिन शब्दों से किसी व्यक्ति या वस्तु के गुण, दशा, स्थिति या भाव आदि का पता चलता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

पढ़ाई

बचपन

ममता

यहाँ पढ़ाई, बचपन, ममता शब्द भावों को प्रकट कर रहे हैं। आप भी इन्हें अपने मन में महसूस कर सकते हो। इन्हें छू, पकड़ या देख नहीं सकते।

याद रखिए—भाववाचक संज्ञाएँ निम्नलिखित चार प्रकार के विकारी शब्दों से बनती हैं—

(क) जातिवाचक संज्ञा से—

जातिवाचक	भाववाचक
बूढ़ा	बुढ़ापा
युवा	यौवन

जातिवाचक	भाववाचक
मज़दूर	मज़दूरी
सेवक	सेवा

(ख) विशेषण से—

विशेषण	भाववाचक
गरीब	गरीबी
कोमल	कोमलता

विशेषण	भाववाचक
स्वस्थ	स्वास्थ्य
मोटा	मोटापा

(ग) क्रिया से—

क्रिया	भाववाचक
पढ़ना	पढ़ाई
हँसना	हँसी

क्रिया	भाववाचक
जागना	जागरण
थकना	थकावट

2. **जातिवाचक संज्ञा**— जिन शब्दों से एक ही प्रकार के सभी प्राणियों या वस्तुओं का पता चलता है, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

दिए गए शब्द— कवि, पेड़, फल जातिवाचक संज्ञा हैं, क्योंकि इनसे एक ही प्रकार के प्राणियों और वस्तुओं का पता चल रहा है।

कवि

फल

3. **भाववाचक संज्ञा**— जिन शब्दों से किसी व्यक्ति या वस्तु के गुण, दशा, स्थिति या भाव आदि का पता चलता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

पढ़ाई

बचपन

ममता

यहाँ पढ़ाई, बचपन, ममता शब्द भावों को प्रकट कर रहे हैं। आप भी इन्हें अपने मन में महसूस कर सकते हो। इन्हें छू, पकड़ या देख नहीं सकते।

याद रखिए— भाववाचक संज्ञाएँ निम्नलिखित चार प्रकार के विकारी शब्दों से बनती हैं—

(क) जातिवाचक संज्ञा से—

जातिवाचक	भाववाचक
बूढ़ा	बुढ़ापा
युवा	यौवन

जातिवाचक	भाववाचक
मज़दूर	मज़दूरी
सेवक	सेवा

(ख) विशेषण से—

विशेषण	भाववाचक
गरीब	गरीबी
कोमल	कोमलता

विशेषण	भाववाचक
स्वस्थ	स्वास्थ्य
मोटा	मोटापा

(ग) क्रिया से—

क्रिया	भाववाचक
पढ़ना	पढ़ाई
हँसना	हँसी

क्रिया	भाववाचक
जागना	जागरण
थकना	थकावट

(घ) सर्वनाम से—

सर्वनाम	भाववाचक
मम	ममता
पराया	परायापन

सर्वनाम	भाववाचक
निज	निजता
सर्व	सर्वस्व

प्राचीन वैयाकरण संज्ञा के केवल यही तीन भेद मानते हैं; जबकि अंग्रेज़ी प्रभाव के कारण आधुनिक विद्वान संज्ञा के दो भेद और मानते हैं—समुदायवाचक और द्रव्यवाचक। प्राचीन वैयाकरण इन्हें जातिवाचक संज्ञा के उपभेद ही कहते हैं। विद्यार्थियों की सुविधा के लिए हम इन्हें अलग से दर्शा रहे हैं।

4. समुदायवाचक या समूहवाचक संज्ञा—जिन शब्दों से एक-जैसे अनेक (एक से अधिक) व्यक्तियों, वस्तुओं या स्थानों का पता चलता है, उन्हें समुदायवाचक या समूहवाचक संज्ञा कहते हैं।

यहाँ टोली और टीम पूरे समूह के प्रतीक हैं।

बच्चों की टोली

क्रिकेट टीम

5. द्रव्यवाचक संज्ञा—जिन शब्दों से किसी द्रव्य, पदार्थ या धातु का पता चलता है, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।

यहाँ दूध और सोना ऐसे पदार्थ हैं जिनसे अनेक वस्तुएँ बनाई जा सकती हैं।

दूध

सोना

कुछ करके सीखें

1. सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—
   (क) व्यक्तिवाचक संज्ञा का उदाहरण है—
   (i) देश ◯ (ii) भारत ◯ (iii) राज्य ◯
   (ख) 'पक्षी' किस प्रकार की संज्ञा का उदाहरण है?
   (i) जातिवाचक ◯ (ii) व्यक्तिवाचक ◯ (iii) भाववाचक ◯
   (ग) 'अध्यापक कक्षा में बच्चों को पढ़ा रहे हैं।' इसमें समूहवाचक संज्ञा क्या है?
   (i) अध्यापक ◯ (ii) कक्षा ◯ (iii) बच्चों ◯
2. कोष्ठक में दिए गए शब्द से भाववाचक संज्ञा बनाकर खाली स्थान में लिखिए—
   (क) उसने .... से काम किया। (ईमानदार
   (ख) गन्ने में बहुत .... थी। (मीठा

(ग) रेखा को ..... लगी है। उसको पानी दे दो। *(प्यासी)*

(घ) मुझे ..... लगी है। खाना दे दो। *(भूखा)*

(ङ) सभी के साथ ..... रखो। *(अपना)*

3. सही कथन के सामने (✓) का और गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए—

(क) जो शब्द किसी के गुण, दोष, दशा, स्वभाव, भाव को प्रकट करें वे भाववाचक संज्ञा कहलाते हैं। ☐

(ख) 'सेना' जातिवाचक संज्ञा है। ☐

(ग) 'श्रीराम' जातिवाचक संज्ञा है। ☐

(घ) जिस शब्द से हमें किसी समुदाय का ज्ञान हो उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं। ☐

(ङ) 'लोहा' द्रव्यवाचक संज्ञा है। ☐

4. नीचे दिए गए संज्ञा शब्दों को उनके भेदों के अनुसार अलग-अलग करके लिखिए—

लड़का	चोर	दूध	नारी	अटल बिहारी	मोहन
दिल्ली	कक्षा	राजा	लोहा	मिठास	पानी
पाठशाला	वीरता	सोना	थकावट	गड्डी	आदित्य
शिक्षक	शरबत	अच्छाई	सेना	नगर	बचपन

जातिवाचक	व्यक्तिवाचक	द्रव्यवाचक	समूहवाचक	भाववाचक
.....	.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....	.....

5. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) संज्ञा से आप क्या समझते हैं? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

(ख) संज्ञा के कितने भेद होते हैं? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दीजिए।

(ग) व्यक्तिवाचक व जातिवाचक संज्ञा में अन्तर लिखिए।

5 संज्ञा के विकार : लिंग, वचन और कारक

Declension of Noun : Gender, Number and Case

संज्ञा विकारी शब्द है, क्योंकि प्रयोग करते समय इसके रूपों में लिंग, वचन तथा कारक के कारण विकार अथवा परिवर्तन आ जाता है।

1. लिंग (Gender)

संज्ञा के जिस रूप से यह पता चलता है कि दिया हुआ शब्द पुरुष जाति का बोध कराता है या स्त्री जाति का, उसे लिंग कहते हैं।

लिंग के भेद

हिन्दी में लिंग के दो भेद होते हैं—1. पुल्लिग और 2. स्त्रीलिंग।

1. **पुल्लिग** (Masculine)—जो शब्द किसी संज्ञा के पुरुष जाति के होने के बारे में बताएँ, उन्हें पुल्लिग कहते हैं; जैसे—अक्षत, नाना, पहाड़, माली आदि।

बालक विद्यालय जाएगा।

सूरज निकल आया है।

बादल घिर आए।

2. **स्त्रीलिंग** (Feminine)—जो शब्द किसी संज्ञा के स्त्री जाति के होने के बारे में बताएँ, उन्हें स्त्रीलिंग कहते हैं; जैसे—सुलेखा, नानी, नदी, मालिन आदि।

दादी भजन करेंगी।

चिड़िया चीं-चीं कर रही है।

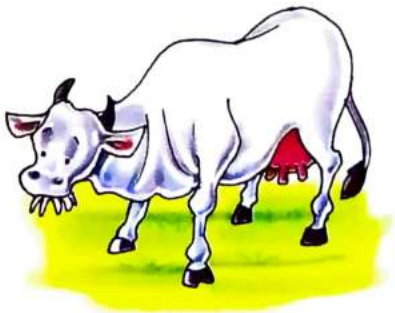

गाय घास चर रही है।

संज्ञा शब्द के पुल्लिंग या स्त्रीलिंग होने का प्रभाव

संज्ञा के पुल्लिंग या स्त्रीलिंग होने से वाक्य के अन्य शब्दों पर इसका प्रभाव पड़ता है; जैसे—

मोर नाच रहा है।

खिड़की खुली है।

लड़का खेलता है।

बच्चो, पर्यायवाची शब्दों का लिंग-निर्णय करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि एक ही वस्तु के नाम भिन्न लिंगों में हो सकते हैं; जैसे—

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
ग्रन्थ	पुस्तक
चित्र	तस्वीर
छाता	छतरी

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
नेत्र	आँख
पत्र	चिट्ठी
व्यथा	वेदना

लिंग का निर्णय

नीचे दिए गए वाक्यों को पढ़कर पूरा कीजिए—

(क) चाची ने गेंद ..... (फेंका/फेंकी) और मामी ने बल्ला ..... (उठाया/उठाई)।

(ख) मेरी तो चाबी भी खो ..... (गया/गई) और ताला भी खो ..... (गया/गई)।

गेंद, चाबी, बल्ला, ताला जैसी निर्जीव वस्तुओं के लिंग का पता क्रिया से चलता है। गेंद, चाबी स्त्रीलिंग शब्द हैं इसलिए उनकी क्रिया भी स्त्रीलिंग (फेंकी, गई) है। बल्ला, ताला पुल्लिंग शब्द हैं इसलिए उनकी क्रिया भी पुल्लिंग (उठाया, गया) है।

सर्वनाम मेरा/मेरी, उसका/उसकी से भी लिंग की पहचान होती है; जैसे—मेरी घड़ी खो गई।

लिंग की पहचान

- कुछ शब्द हमेशा पुल्लिंग होते हैं; जैसे—पहाड़ों के नाम, दिनों के नाम, पेड़ों के नाम [अपवाद—इमली, नारंगी (स्त्रीलिंग)], सागरों के नाम, देशों के नाम, ग्रहों के नाम [अपवाद—पृथ्वी (स्त्रीलिंग)], महीनों के नाम [अपवाद—जनवरी (स्त्रीलिंग)] आदि।
- कुछ शब्द हमेशा स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे—नदियों के नाम, लिपियों के नाम, भाषाओं के नाम, बोलियों के नाम, तिथियों के नाम आदि।

- कुछ शब्द पुरुष तथा स्त्री के लिए समान रहते हैं; जैसे—प्रधानमन्त्री, राष्ट्रपति, डॉक्टर, मन्त्री, खिलाड़ी आदि।
- कुछ शब्दों में **नर** या मादा लगाकर पुल्लिंग या स्त्रीलिंग शब्द बनाए जाते हैं; जैसे—नर भेड़िया, मादा भेड़िया, नर कौआ–मादा कौआ आदि।

लिंग बदलने के कुछ नियम

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
आ लगाकर	
छात्र	छात्रा
महोदय	महोदया
शिष्य	शिष्या
नी लगाकर	
मोर	मोरनी
ऊँट	ऊँटनी
इया लगाकर	
बूढ़ा	बुढ़िया
चूहा	चुहिया
आनी लगाकर	
सेठ	सेठानी
देवर	देवरानी

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
ई लगाकर	
बेटा	बेटी
नाना	नानी
बकरा	बकरी
इका लगाकर	
गायक	गायिका
लेखक	लेखिका
इन लगाकर	
धोबी	धोबिन
माली	मालिन
मान/वान का मती/वती करके	
श्रीमान	श्रीमती
गुणवान	गुणवती

अन्य उदाहरण—

वर	वधू
कवि	कवयित्री
ठाकुर	ठकुराइन
अभिनेता	अभिनेत्री
राजा	रानी
विद्वान	विदुषी

कुछ करके सीखें

1. **सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—**

(क) कौन-सा संज्ञा शब्द पुल्लिंग है?

(i) यमुना (ii) हिमालय (iii) पढ़ाई

(ख) 'गुणवान' शब्द का स्त्रीलिंग क्या होगा?

(i) गुणवानी (ii) गुणमती (iii) गुणवती

2. निम्नलिखित शब्दों में से पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग शब्द चुनकर उचित स्थान पर लिखिए—

सुत	विद्वान	जेठानी	आचार्या	दर्शक	सेवक	क्षत्रिय
इन्द्राणी	भवदीय	विधुर	भाग्यवान	तितली	सुता	चिट्ठी

पुल्लिंग

.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....

स्त्रीलिंग

.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....

3. नीचे लिखे शब्दों के लिंग-रूप बदलकर लिखिए—

कवि	.....	वधू	.....
नौकर	.....	देवरानी	.....
सुत	.....	पुत्री	.....
नाना	.....	बुढ़िया	.....
माली	.....	ठकुराइन	.....
लेखक	.....	नायिका	.....
शेर	.....	विदुषी	.....

4. निम्नलिखित वाक्यों में संज्ञाओं के लिंग बदलिए तथा जहाँ क्रिया आदि बदलना आवश्यक हो, उन्हें भी बदलिए—

(क) मेरे पिता जी ने माली को बुलाया। .....

(ख) नौकर बाज़ार गया है। .....

(ग) कक्षा में अध्यापिका पढ़ा रही हैं। .....

(घ) द्वार पर भिखारी खड़ा है। .....

(ङ) गायिका मंच पर पधार रही हैं।

5. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) लिंग किसे कहते हैं?

(ख) लिंग के कितने भेद होते हैं? उदाहरण सहित लिखिए।

2. वचन (Number)

व्याकरण में वचन से तात्पर्य किसी की कही गई बात या वादा नहीं, बल्कि संख्या है। आइए, इस विषय में विस्तार से चर्चा करें—

आप रोजाना सवेरे आकाश में एक सूरज को उदय होते देखते हो।

इसी तरह, रात के समय आकाश में एक चाँद दिखता है।

और तारे! रात के समय आकाश में एक नहीं अनगिनत तारे होते हैं। हममें से कोई भी उन्हें गिन नहीं पाएगा।

तो आप समझ गए होंगे—सूरज एक, चन्दा एक और तारे अनेक।

सूरज एक

चन्दा एक

तारे अनेक

इस प्रकार संज्ञा या सर्वनाम शब्द के जिस रूप से उसके एक या एक से अधिक होने का पता चलता है, उसे **वचन** कहते हैं।

वचन के भेद

वचन के दो भेद होते हैं—1. एकवचन और 2. बहुवचन।

1. **एकवचन** (Singular Number)—जिन शब्दों से एक संख्या का पता चलता है, उन्हें एकवचन कहते हैं; जैसे—बस्ता, पेन, पेंसिल, कॉपी, पुस्तक आदि।

तोता पेड़ पर बैठा है। छात्रा विद्यालय जा रही है।

2. **बहुवचन** (Plural Number)—जिन शब्दों से एक से अधिक संख्या का पता चलता है, उन्हें बहुवचन कहते हैं; जैसे—सड़कें, चप्पलें, ऋतुएँ, नदियाँ आदि।

तोते पेड़ पर बैठे हैं। छात्राएँ विद्यालय जा रही हैं।

चित्रों को देखकर उसके नीचे लिखे वाक्यों को पढ़िए। एकवचन और बहुवचन दोनों प्रकार के वाक्यों की संज्ञाएँ और क्रियाएँ भिन्न हैं।

वचन के बदलने से संज्ञा और क्रिया का रूप बदल जाता है।

वचन के बदलने से कई बार क्रिया का रूप बदल जाता है परन्तु संज्ञा का रूप नहीं बदलता; जैसे—

विद्यार्थी चित्र बना रहा है। विद्यार्थी चित्र बना रहे हैं।

वचन सम्बन्धी कुछ जानने योग्य बातें

1. कुछ संज्ञा शब्द ऐसे हैं जो पूरे समुदाय का प्रतिनिधित्व करते हैं। अत: इनका प्रयोग एकवचन में ही होता है; जैसे—

   जनता भड़क गई। भीड़ आगे बढ़ती गई।

2. कहीं-कहीं एकवचन का प्रयोग बहुवचन के रूप में होता है; जैसे—

   दु:खी स्त्री के आँसू नहीं थमे। मोहन ने हस्ताक्षर नहीं किए।

3. आदर के लिए बहुवचन शब्दों का प्रयोग किया जाता है; जैसे—

   मेरी माता जी खाना बना रही हैं। मेरी अध्यापिका बहुत अच्छी हैं।

   उसके पिता जी पत्रकार हैं। मेरे दादा जी बगीचे में हैं।

वचन-परिवर्तन तालिका

1. पुल्लिग शब्दों के अन्त में आए 'आ' को 'ए' में बदलकर बहुवचन बनाते हैं—

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
बच्चा	बच्चे	कपड़ा	कपड़े	तकिया	तकिये
घड़ा	घड़े	लड़का	लड़के	पहिया	पहिये
बूढ़ा	बूढ़े	करेला	करेले	पत्ता	पत्ते

2. स्त्रीलिंग शब्दों के अन्त में आए 'आ' में 'एँ' जोड़कर बहुवचन बनाते हैं—

अध्यापिका	अध्यापिकाएँ	परीक्षा	परीक्षाएँ	कथा	कथाएँ
लेखिका	लेखिकाएँ	कक्षा	कक्षाएँ	योजना	योजनाएँ
कविता	कविताएँ	माला	मालाएँ	सभा	सभाएँ

3. स्त्रीलिंग शब्दों के अन्त में आए 'अ' को 'एँ' में बदलकर बहुवचन बनाते हैं—

बहन	बहनें	चादर	चादरें	सड़क	सड़कें
गाय	गायें	राह	राहें	सन्तान	सन्तानें
पुस्तक	पुस्तकें	चप्पल	चप्पलें	बात	बातें

4. स्त्रीलिंग शब्दों के अन्त में आए 'इ', 'ई' को 'इयाँ' में बदलकर बहुवचन बनाते हैं—

नीति	नीतियाँ	रीति	रीतियाँ	झाड़ी	झाड़ियाँ
निधि	निधियाँ	साड़ी	साड़ियाँ	नारी	नारियाँ
पहाड़ी	पहाड़ियाँ	गाड़ी	गाड़ियाँ	स्त्री	स्त्रियाँ

5. अन्त में चन्द्रबिन्दु (ँ) लगाकर बहुवचन बनाते हैं—

चुहिया	चुहियाँ	बँदरिया	बँदरियाँ	गुड़िया	गुड़ियाँ

6. स्त्रीलिंग शब्दों के अन्त में 'उ' या 'ऊ' के बाद 'एँ' जोड़ने तथा 'ऊ' को 'उएँ' में बदलकर बहुवचन बनाते हैं—

धेनु	धेनुएँ	तराजू	तराजुएँ	ऋतु	ऋतुएँ
वस्तु	वस्तुएँ	बहू	बहुएँ	वधू	वधुएँ

7. अन्त में 'गण', 'वृन्द', 'जन', 'वर्ग' आदि लगाकर बहुवचन बनाते हैं—

विद्यार्थी	विद्यार्थीगण	अधिकारी	अधिकारीगण	गुरु	गुरुजन
अतिथि	अतिथिगण	अध्यापक	अध्यापकवृन्द	श्रमिक	श्रमिकवर्ग

कुछ करके सीखें

1. सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) किसका प्रयोग सदा एकवचन में ही होता है?

(i) आँसू ◯ (ii) जनता ◯ (iii) हस्ताक्षर ◯

(ख) 'बाग में फूल खिल गए।' इसमें 'फूल' का वचन बताइए।

(i) बहुवचन ◯ (ii) एकवचन ◯ (iii) इनमें से कोई नहीं ◯

2. एकवचन तथा बहुवचन शब्द अलग-अलग करके उचित स्थान पर लिखिए—

माताएँ अँगूठा घड़ी पुस्तिका खिलौने पौधे गमला माचिसें शब्दकोश खिड़कियाँ

एकवचन	बहुवचन
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....

3. कोष्ठकों में दिए गए शब्दों के बहुवचन-रूप से वाक्य पूरे कीजिए—

(क) ..... को धोकर खाना चाहिए। (*फल*)

(ख) हमारी पुस्तकें ..... से सजी हैं। (*चित्र*)

(ग) बच्चे ..... में खड़े हैं। (*पंक्ति*)

(घ) ..... कैसे हैं? (*आम*)

(ङ) चन्द्रशेखर और उनके ..... आजादी के लिए लड़ रहे थे। (*साथी*)

4. रंगीन शब्द का वचन बदलकर वाक्य दुबारा लिखिए—

(क) सुनयना ने पौधा लगाया। .....

(ख) कवि ने कविता सुनाई। .....

(ग) बच्चा चुपचाप बैठा है। .....

(घ) उदयपुर में पुरानी हवेली देखी। .....

(ङ) यह बस शिमला नहीं जाएगी। .....

3. कारक (Case)

नीचे दिए गए चित्रों को ध्यानपूर्वक देखिए—

निकिता ने ईशान के लिए चाय बनाई।

निकिता के हाथ से प्याला गिरा।

निकिता के कपड़ों पर चाय गिरी।

इन चित्रों में निकिता का सम्बन्ध क्रिया के साथ किसी-न-किसी रूप से जुड़ा हुआ है। निकिता **संज्ञा** है, उसका सम्बन्ध क्रिया से कुछ विशेष शब्दों से जुड़ा हुआ है; जैसे—पहले वाक्य में **'के लिए'**, दूसरे में **'से'** (अलग होने में), तीसरे में 'पर'। इन चिह्नों को ही कारक-चिह्न कहते हैं। ये कारक-चिह्न संज्ञा या सर्वनाम का क्रिया के साथ सम्बन्ध दर्शाते हैं। इन कारक-चिह्नों को परसर्ग (विभक्ति) भी कहा जाता है।

आपने देखा कि केवल शब्दों को पास-पास रख देने से वाक्य नहीं बनते और न ही अर्थ स्पष्ट होता है। वाक्य का प्रत्येक शब्द एक-दूसरे से जुड़ा होता है और सबका क्रिया के साथ कोई-न-कोई सम्बन्ध होता है। वाक्य के संज्ञा, सर्वनाम पदों का उस वाक्य की क्रिया के साथ सम्बन्ध को कारक कहा जाता है।

कारक के भेद

कारक के निम्नलिखित आठ भेद होते हैं। इनके नाम तथा विभक्ति-चिह्न नीचे दिए गए हैं—

कारक	विभक्ति-चिह्न
1. कर्ता (Nominative)	ने (by)
2. कर्म (Accusative)	को (to)
3. करण (Instrumental)	से, के द्वारा (with)
4. सम्प्रदान (Dative)	को, के लिए (for)
5. अपादान (Ablative)	से (अलग होने के अर्थ में) (from)
6. सम्बन्ध (Genitive)	का, के, की; रा, रे, री (of)
7. अधिकरण (Locative)	में, विषय में, पर (on)
8. सम्बोधन (Vocative)	हे! ओ! अरे!

आइए, अब विस्तार से कारक के बारे में जानते हैं—

1. कर्ता कारक—काम को करने वाला।

कंचन ने चित्र बनाया।

कंचन चित्र बना रही है।

यहाँ चित्र बनाने का काम कंचन ने किया, इसलिए कंचन कर्ता कारक है।

2. कर्म कारक— काम का प्रभाव जिस पर पड़े।

अलमारी को खोल दो।

अंकुर ने अलमारी खोली!

अंकुर ने क्या खोला? अलमारी

यहाँ खोलना क्रिया का प्रभाव अलमारी पर पड़ रहा है, इसलिए 'अलमारी' कर्म कारक है।

3. करण कारक—जिस साधन से काम किया जाए।

लड़कियाँ साइकिल से जा रही हैं।

लड़कियाँ किससे जा रही हैं? साइकिल से

यहाँ जाने का काम साइकिल से किया जा रहा है, इसलिए 'साइकिल से' करण कारक है।

4. सम्प्रदान कारक—जिसके लिए काम किया जाए।

अंजलि दादी जी के लिए आइसक्रीम लाई।

अंजलि ने दादी जी को आइसक्रीम दी।

अंजलि आइसक्रीम किसके लिए लाई? दादी जी के लिए

अंजलि ने आइसक्रीम किसे दी? दादी जी को

यहाँ अंजलि ने दादी जी के लिए आइसक्रीम देने का काम किया, इसलिए 'दादी जी के लिए', 'दादी जी को' सम्प्रदान कारक है।

5. अपादान कारक—किसी से अलग होना, दूरी, तुलना करना।

पेड़ से पत्ते गिर रहे हैं।

पीले पत्ते, हरे पत्तों से बड़े हैं।

पेड़ मेरे घर से दूर है। (दूरी)

यहाँ पेड़ से (अलग होना), हरे पत्तों से (तुलना), घर से (दूरी) में अपादान कारक है।

6. सम्बन्ध कारक—दो शब्दों के बीच सम्बन्ध बताता है।

रेनू चित्र बनाने की कॉपी लाई।

यह पेन्सिल भी मेरी है।

किसकी पेन्सिल है? मेरी

किसकी कॉपी? चित्र बनाने की

यहाँ 'मेरी' और 'चित्र बनाने की कॉपी' में सम्बन्ध कारक है।

7. अधिकरण कारक—जिस पर या जिसमें कोई वस्तु हो।

पेड़ पर घोंसला है।

घोंसले में अण्डे हैं।

घोंसला कहाँ है? पेड़ पर

अण्डे कहाँ हैं? घोंसले में

यहाँ 'घोंसले में' और 'पेड़ पर' में अधिकरण कारक है।

8. सम्बोधन कारक—जिसे पुकारा जाए या सम्बोधित किया जाए।

अरे भैया! बचाओ, ज़रा सुनना।

किसे पुकारा गया? भैया को

यहाँ 'अरे भैया!' सम्बोधन कारक है।

ध्यान रखें— *सम्बोधित करते समय बच्चो, भाइयो, लड़को, लड़कियो शब्द का प्रयोग किया जाता है; बच्चों, भाइयों, लड़कों, लड़कियों का नहीं।*

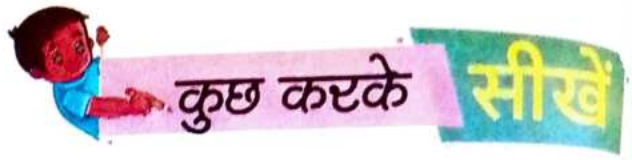

1. सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) कारक कितने प्रकार के होते हैं?

(i) चार ◯ (ii) छः ◯ (iii) आठ ◯

(ख) 'रोहित छत से गिर पड़ा।' इस वाक्य में कौन-सा कारक है?

(i) अपादान ◯ (ii) कर्म ◯ (iii) करण ◯

(ग) 'गरिमा ने चाकू से सब्ज़ी काटी।' यह किस कारक का उदाहरण है?

(i) कर्म ◯ (ii) करण ◯ (iii) अपादान ◯

2. उपयुक्त कारक-चिह्न लगाकर वाक्य पूरे कीजिए—

ने	को	से	में	पर	के लिए	अरे!	का

(क) बच्चे कक्षा ..... बैठे हैं।

(ख) इरफान घोड़े ..... गिर गया।

(ग) श्रेया ..... बस्ता खो गया।

(घ) चिड़िया ..... अण्डे दिए।

(ङ) सिपाही ..... बुलाना तो ज़रा!

(च) मैं दादी जी ..... शॉल लाया हूँ।

(छ) ..... भाई, कहाँ जा रहे हो?

(ज) दीवार ..... छिपकली थी।

(झ) डॉक्टर ..... फीस देनी है।

(ञ) मैंने चाकू ..... सेब काटा।

3. उचित स्थान पर परसर्ग लगाकर वाक्य दोबारा लिखिए—

(क) गीता शीला घर गई। .....

(ख) शीला गीता गुड़िया दी। .....

(ग) गीता गुड़िया मेज़ रख दी। .....

(घ) हवा गुड़िया मेज़ गिर गई। .....

(ङ) शीला गुड़िया टूट गई। .....

4. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) कारक से आप क्या समझते हैं? उदाहरण देकर समझाइए।

(ख) कारक के भेद लिखिए।

6

सर्वनाम
Pronoun

रोहित पाँचवीं कक्षा में पढ़ता है। वह एक बुद्धिमान बालक है। उसकी माँ अध्यापिका हैं तथा उसके पिता डॉक्टर हैं। वे उसे बहुत प्यार करते हैं।

इन वाक्यों में रंगीन शब्द रोहित के लिए प्रयोग किए गए हैं। बार-बार रोहित शब्द न लिखना पड़े इसलिए वह, उसकी, उसके और उसे शब्दों का प्रयोग किया गया है। ये शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

'सर्व + नाम' यानी सबके लिए नाम। ये शब्द सभी के लिए प्रयोग किए जा सकते हैं। इनका प्रयोग करने से भाषा सुन्दर और स्पष्ट हो जाती है।

जो शब्द संज्ञा शब्दों के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं, वे सर्वनाम कहलाते हैं।

एक ही सर्वनाम शब्द अलग-अलग व्यक्तियों या प्राणियों के लिए बोला या लिखा जा सकता है; जैसे— अंजलि मेरी बहन है। वह बहुत सुन्दर है।

नमन मेरा मित्र है। वह बहुत होशियार है।

यहाँ लड़का और लड़की दोनों के लिए 'वह' शब्द का प्रयोग किया गया है।

इस प्रकार, सर्वनाम शब्द स्त्रीलिंग तथा पुल्लिंग दोनों में समान रहते हैं।

- सर्वनाम के एकवचन तथा बहुवचन रूप होते हैं—

  एकवचन — मैं, तुम, वह, यह, इसे, उसे आदि।

  बहुवचन — हम, आप, वे, ये, इन्हें, उन्हें आदि।

सर्वनाम के भेद

सर्वनाम के निम्नलिखित छ: भेद होते हैं—

1. पुरुषवाचक सर्वनाम — मैं/हम, तू/तुम, आप, वह/वे
2. निश्चयवाचक सर्वनाम — यह, वह, ये
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम — कोई, कुछ, किसने
4. प्रश्नवाचक सर्वनाम — कौन, क्या, यहाँ
5. सम्बन्धवाचक सर्वनाम — जो-सो, जैसा-वैसा
6. निजवाचक सर्वनाम — स्वयं, अपने आप, अपना

1. पुरुषवाचक सर्वनाम—जो सर्वनाम शब्द बोलने वाले, सुनने वाले या किसी अन्य व्यक्ति के लि प्रयोग किए जाते हैं, वे पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे—

मैं खेलने जा रहा हूँ।

तुम क्या कर रहे हो?

वह पढ़ रहा है।

पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैं—

(क) उत्तम पुरुष — मैं, हम *(बात करने वाला)*

(ख) मध्यम पुरुष — तू, तुम, आप *(बात सुनने वाला)*

(ग) अन्य पुरुष — वह, वे, यह, ये *(अन्य व्यक्ति)*

पुरुषवाचक सर्वनाम शब्दों की कुछ ध्यान देने योग्य बातें

'तू' एकवचन का प्रयोग बेहद अपनेपन और किसी के प्रति कम सम्मान होने, दोनों परिस्थितियों में किया जाता है; जैसे—

- प्रभु, तू बड़ा महान है। *(यहाँ सम्मान और अपनापन है।)*
- तू अब यहाँ से चला जा। *(यहाँ तू में तू-तड़ाक छिपा है।)*

'मैं' की जगह 'हम'—हम आपसे बात नहीं करते।

यहाँ कुट्टी करने वाला व्यक्ति एक भी हो सकता है।

'तुम' के स्थान पर 'तू' और 'तू' के स्थान पर 'तुम' का प्रयोग—

अरे! तुम आ गए।

यह वाक्य एक व्यक्ति के लिए भी कहा जा सकता है और एक से अधिक व्यक्तियों के लिए भी।

2. निश्चयवाचक सर्वनाम—जो सर्वनाम शब्द किसी वस्तु या व्यक्ति की ओर निश्चित रूप से संकेत करते हैं, वे निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे—

यह कोट अनिल का है। वह चाबी पापा के स्कूटर की है।

तुम्हें बाहर कोई बुला रहा है। तुम कुछ कह रहे थे।

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम—जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति का बोध नहीं होता है, वे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे—

4. प्रश्नवाचक सर्वनाम—जिन सर्वनाम शब्दों से प्रश्न पूछा जाता है, वे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे—

तुम मेरे लिए क्या लाए हो? बाहर कौन खड़ा है?

5. सम्बन्धवाचक सर्वनाम—जो शब्द दो बातों में सम्बन्ध जोड़ते हैं, वे सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे—

जो मेहनत करेगा वह पास होगा। जैसा बोओगे वैसा काटोगे।

6. निजवाचक सर्वनाम—जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग अपने लिए किया जाता है, वे निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं; जैसे—

यह काम मैं अपने-आप कर लूँगा। यह चित्र मैंने स्वयं बनाया है।

1. सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) सर्वनाम के कितने भेद हैं?

(i) चार ◯ (ii) पाँच ◯ (iii) छः ◯

(ख) 'जहाँ चाह वहाँ राह।' किस सर्वनाम का उदाहरण है?

(i) निश्चयवाचक ◯ (ii) सम्बन्धवाचक ◯ (iii) निजवाचक ◯

(ग) 'शायद दूध में कुछ पड़ा है।' इस वाक्य में कौन-सा सर्वनाम है?

(i) अनिश्चयवाचक ◯ (ii) प्रश्नवाचक ◯ (iii) पुरुषवाचक ◯

2. निम्नलिखित अनुच्छेद पढ़कर सर्वनाम शब्दों के नीचे रेखा खींचिए—

एक बार नेपोलियन ने एक ज्योतिषी को अपना हाथ दिखाया। ज्योतिषी ने कहा, "तुम्हारे हाथ में तो भाग्य की रेखा ही नहीं है।" नेपोलियन ने पूछा, "यह रेखा कहाँ होती है?" ज्योतिषी ने हाथ में भाग्य की रेखा का स्थान बताया। नेपोलियन ने उस स्थान पर चाकू से रेखा खींची और कहा, "लीजिए बन गई भाग्य की रेखा।" ज्योतिषी ने कहा, "यह रेखा तो तुमने खींची है।" नेपोलियन ने दृढ़ता से कहा, "हाँ, क्योंकि मैं अपने भाग्य का निर्माता स्वयं हूँ।"

3. दिए गए वाक्यों में से सर्वनाम शब्दों को छाँटकर उनके भेद लिखिए—

वाक्य	सर्वनाम	भेद
(क) आप भी खाइए।	.....	.....
(ख) रमेश अपने-आप काम करेगा।	.....	.....
(ग) यह नीता का घर है।	.....	.....
(घ) जो करेगा सो भरेगा।	.....	.....
(ङ) कौन आया है?	.....	.....
(च) दूध में कुछ गिर गया है।	.....	.....

4. कोष्ठक में से उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थान भरिए—

(क) ..... आप मेरे साथ बाज़ार चलेंगे? *(कब/क्या/कौन/आप)*

(ख) ज़रा देखो, बाहर ..... खड़ा हुआ है। *(कुछ/कोई/आप/क्या)*

(ग) जो परिश्रम करेगा ..... सफल होगा। *(उस/वह/वही/खुद)*

(घ) छात्र अपना काम ..... कर रहे हैं। *(कब/वह/क्या/स्वयं)*

(ङ) ..... कुछ भी नहीं जानता है। *(मैं/ आप/वह/उन्हें)*

5. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) सर्वनाम से आप क्या समझते हैं? उदाहरण सहित समझाइए।

(ख) सर्वनाम के कितने भेद होते हैं? स्पष्ट कीजिए।

(ग) अनिश्चयवाचक तथा निश्चयवाचक सर्वनाम में अन्तर बताइए।

7

विशेषण
Adjective

संज्ञाओं से हमारी जान-पहचान है। हम जानते हैं कि नाम को ही संज्ञा कहते हैं। नीचे दिए चित्र में भी अनेक संज्ञाएँ हैं। इन संज्ञाओं के बारे में और कुछ जानना हो तो हम कैसा/कैसी वाला प्रश्न पूछते हैं। कैसा/कैसी के उत्तर में जो शब्द आए हैं वे इन संज्ञाओं की विशेषता बता रहे हैं।

नीचे लिखे वाक्यों को पढ़िए—

- यह घर मेरा है।
- मेरे घर के दरवाजे पर एक कुत्ता है।
- घर के पास कुछ बड़े-बड़े पेड़ हैं।
- पेड़ों पर कई पक्षी बैठे हैं।

इन वाक्यों में घर, कुत्ता, पेड़ और पक्षी संज्ञा पदों के पहले जो रंगीन शब्द हैं, वे (यह, मेरे, एक, बड़े-बड़े, कई) संज्ञा पदों की विशेषता बता रहे हैं। जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम पदों की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं।

विशेष्य—जो विशेषण शब्द जिस संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता है, उसे विशेष्य कहते हैं; जैसे—'सुन्दर फूल' में *सुन्दर* विशेषण है तथा *फूल* विशेष्य।

विशेषण का प्रयोग

- सामान्यत: विशेषण विशेष्य से पहले आते हैं, परन्तु कई बार इनका प्रयोग विशेष्य के बाद भी होता है; जैसे—गणित का प्रश्न-पत्र कठिन था। आपका नौकर परिश्रमी है।
- दो या दो से अधिक विशेष्यों के गुणों या दोषों की तुलना करने के लिए 'से' का या की तुलना में प्रयोग होता है; जैसे—सलमा राधा से अधिक परिश्रमी है। मेरा घर आपके घर की तुलना में छोटा है।
- आकारान्त विशेषण, विशेष्य के लिंग और वचन के अनुसार रूप बदलते हैं; जैसे—काला घोड़ा, काली घोड़ी, काले घोड़े।
- शेष विशेषणों का रूप स्थिर रहता है अर्थात् वे विशेष्य के लिंग, वचन के अनुसार नहीं बदलते; जैसे—सुन्दर लड़का, सुन्दर लड़की, सुन्दर लड़के।

विशेषण के भेद

विशेषण निम्नलिखित चार प्रकार के होते हैं—

1. गुणवाचक 2. संख्यावाचक 3. परिमाणवाचक 4. सार्वनामिक (संकेतवाचक)

1. गुणवाचक विशेषण—जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, स्वभाव, दशा, आकार, रं आदि के विषय में बताते हैं, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे—

सुरभि ने नया बस्ता खरीदा है।

माधुरी की जापानी गुड़िया नाचती है।

यहाँ नया, जापानी गुणवाचक विशेषण हैं।

कुछ और गुणवाचक विशेषण हैं—ताजा, प्राचीन, बाहरी, बायाँ, भारतीय, चौकोर, लम्बा, हरा, पतला, गीला, गरीब, भला, सच्चा, पापी आदि।

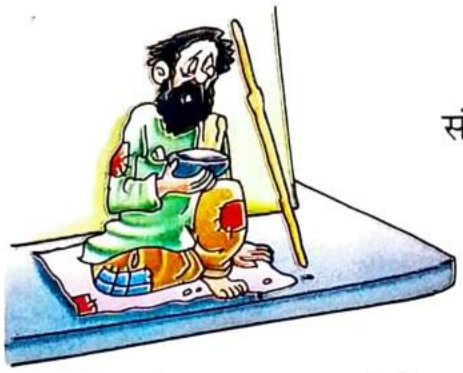

2. संख्यावाचक विशेषण—जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की संख्या बताते हैं, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं; जैसे—

फुटपाथ पर एक भिखारी बैठा है।

उनमें से तीसरी लड़की को बुलाओ।

यहाँ एक, तीसरी संख्यावाचक विशेषण हैं।

कुछ और संख्यावाचक विशेषण हैं—तेरह, सातवाँ, तिगुना, पौन, प्रत्येक आदि।

संख्यावाचक विशेषण दो प्रकार के होते हैं—

(क) निश्चित संख्यावाचक—दस केले, चार बालक।

(ख) अनिश्चित संख्यावाचक—कुछ लोग, थोड़े आदमी।

3. परिमाणवाचक विशेषण—जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की मात्रा या परिमाण के विषय में बताते हैं, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे—

गुरमीत पाँच मीटर कपड़ा लाया।

शोभित थोड़ा दूध पी गया।

यहाँ पाँच मीटर, थोड़ा परिमाणवाचक विशेषण हैं।

कुछ और परिमाणवाचक विशेषण हैं—कम, बहुत, अधिक, दस मीटर, तेरह लीटर, थोड़ा (तेल) आदि।

परिमाणवाचक विशेषण भी दो प्रकार के होते हैं—

(क) निश्चित परिमाणवाचक—तीन मीटर कपड़ा, दो किलो चीनी।

(ख) अनिश्चित परिमाणवाचक—थोड़ा दूध, कुछ पानी।

4. सार्वनामिक/संकेतवाचक विशेषण—जो सर्वनाम शब्द विशेषण के रूप में संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। इसे संकेतवाचक विशेषण भी कहते हैं; जैसे—

यह मज़दूर वहाँ खड़ा था।

कोई आदमी दरवाज़ा खटखटा रहा है।

यहाँ यह, कोई सार्वनामिक विशेषण हैं।

कुछ और सार्वनामिक विशेषणों के उदाहरण—कैसा कपड़ा, जैसा आदमी, ऐसा मकान, यह विद्यालय, वह झोंपड़ी आदि।

निश्चयवाचक सर्वनाम और सार्वनामिक विशेषण में अन्तर

निश्चयवाचक सर्वनाम किसी व्यक्ति, प्राणी, वस्तु, घटना आदि की निश्चितता का बोध कराता है; जबकि सार्वनामिक विशेषण से व्यक्ति, प्राणी तथा वस्तु की विशेषता का पता चलता है; जैसे—

(क) यह शशांक का घर है। *[निश्चयवाचक सर्वनाम]*

(ख) यह घर शशांक का है। *[सार्वनामिक विशेषण]*

विशेषण की अवस्थाएँ (Degrees of Adjectives)

एक ही प्रकार की विशेषता वाले पदार्थों एवं प्राणियों की विशेषता में अधिकता अथवा न्यूनता होती है। इसका ज्ञान तुलना करके जाना जाता है। विशेषण हमें तुलनात्मक ज्ञान कराते हैं। विशेषणों की तुलना की निम्नलिखित तीन अवस्थाएँ हैं—

1. मूलावस्था—इसमें किसी प्रकार की तुलना नहीं होती, केवल विशेषता का सामान्य कथन मात्र होता है; जैसे—1. अमरूद मीठा है।, 2. गीता अच्छी लड़की है।

2. उत्तरावस्था—इसमें दो व्यक्तियों या वस्तुओं की तुलना करके एक को दूसरे से अच्छा या बुरा बताया जाता है; जैसे—1. सुनीता सोनाली से अच्छी है।, 2. शहद सेब से मीठा है।

3. उत्तमावस्था—इसमें दो से अधिक व्यक्तियों या वस्तुओं की तुलना करके एक को सबसे अच्छा या सबसे बुरा बताया जाता है; जैसे—1. भारती बच्चों में सबसे अच्छी है।, 2. गौरव सबसे चतुर है।

कुछ शब्दों की अवस्थाओं के बारे में जानें—

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
लघु	लघुतर	लघुतम
निकट	निकटतर	निकटतम
वृहत	वृहत्तर	वृहत्तम
न्यून	न्यूनतर	न्यूनतम
महान	महानतर	महानतम

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
उच्च	उच्चतर	उच्चतम
सुंदर	सुंदरतर	सुंदरतम
निम्न	निम्नतर	निम्नतम
श्रेष्ठ	श्रेष्ठतर	श्रेष्ठतम
मधुर	मधुरतर	मधुरतम

कुछ करके सीखें

1. **सही उत्तर पर सही (✓) का** चिह्न लगाइए—

(क) जो विशेषण शब्द संज्ञा/सर्वनाम की माप-तौल के बारे में बताए, उसे क्या कहते हैं?

(i) गुणवाचक ◯ (ii) परिमाणवाचक ◯ (iii) संख्यावाचक ◯

(ख) 'वीर सैनिक देश की रक्षा करते हैं।' इसमें कौन-सा शब्द विशेष्य है?

(i) वीर ◯ (ii) सैनिक ◯ (iii) देश ◯

(ग) 'बैंक में बहुत रुपये होते हैं।' इस वाक्य में कौन-सा विशेषण है?

(i) परिमाणवाचक ◯ (ii) गुणवाचक ◯ (iii) संख्यावाचक ◯

(घ) 'इस पुस्तक को अवश्य पढ़िए।' यह विशेषण के किस भेद का उदाहरण है?

(i) सार्वनामिक ◯ (ii) संख्यावाचक ◯ (iii) गुणवाचक ◯

2. **नीचे दिए गए विशेषण शब्दों** को उचित स्थानों में लिखिए—

कुछ तीखा चौड़ाई यह चतुर वे जापानी पाँचवाँ वह एक दर्जन आठ किलो उस थोड़ा बत्तीस तीन मीटर 100 किमी

गुणवाचक	संख्यावाचक	परिमाणवाचक	सार्वनामिक
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....
.....	.....	.....	.....

3. सही के कथन सामने सही (✓) का और गलत कथन के सामने गलत (✗) का चिह्न लगाइए—

(क) जो शब्द विशेषण की विशेषता बताते हैं, उन्हें प्रविशेषण कहते हैं। ☐

(ख) विशेषण के आठ प्रमुख भेद होते हैं। ☐

(ग) 'एक मीटर', 'तीन लीटर' 'पाँच किलो' संख्यावाचक विशेषण के उदाहरण हैं। ☐

(घ) वे सर्वनाम जो संज्ञा शब्दों से पहले प्रयुक्त होते हैं, उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। ☐

(ङ) जो शब्द क्रिया की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं। ☐

4. नीचे लिखे वाक्यों में से विशेषण-विशेष्य अलग-अलग लिखिए—

वाक्य	विशेषण	विशेष्य
(क) थोड़ा पानी दीजिए।	.....	.....
(ख) वह बड़े दरिया में पहुँचा।	.....	.....
(ग) उनके पास चतुर्भुजी मूर्ति थी।	.....	.....
(घ) कीमती कंगन का रैदास क्या करेगा?	.....	.....
(ङ) उन्हें कम वेतन मिलता था।	.....	.....

5. विशेषण और विशेष्य का मिलान कीजिए—

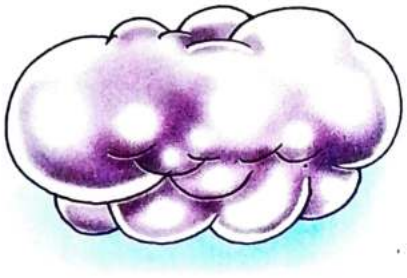

विशेषण	विशेष्य
ठण्डा	छतरी
दयालु	बादल
काले	नदी
गहरी	शरबत
रंग-बिरंगी	महिला

6. निम्नलिखित वाक्यों में विशेषण शुद्ध करके लिखिए—

(क) इस टावर की लम्बाई 100 मीटर है। .....

(ख) पिता जी आपसे कौन आदमी मिलने आया है। .....

(ग) मैं छठी तारीख को दिल्ली जा रही हूँ। .....

(घ) अशोक को कमीज़ के लिए चार किलो कपड़ा चाहिए। .....

7. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) विशेषण किसे कहते हैं?

(ख) विशेषण के कितने भेद होते हैं? उदाहरण सहित लिखिए।

(ग) विशेषण और विशेष्य में क्या सम्बन्ध है? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

क्रिया

Ver

क्रिया का अर्थ है—कार्य या काम। हम जीवन में जो भी कार्य करते हैं, वे सब क्रियाएँ हैं। पढ़ना, सोना, लिखना, खेलना आदि क्रिया शब्द हैं।

पढ़ना

लिखना

सोना

खेलना

ये क्रिया शब्द जब वाक्य में आते हैं तो उनका रूप काल के अनुसार बदल जाता है। कुछ उदाहरण देखिए—

अनुज ने काम नहीं किया।	*(करना)*
प्रशान्त अभी समाचार सुन रहा है।	*(सुनना)*
नेहा, तुम मेरे साथ बाज़ार चलोगी?	*(चलना)*
मेरा भाई रोज़ फुटबॉल खेलता है।	*(खेलना)*

जिस शब्द अथवा पद से किसी कार्य के करने अथवा होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं

क्रिया कभी एक शब्द की होती है, कभी एक से ज्यादा शब्दों की होती है; जैसे—

- यह पुस्तक है। (क्रिया—एक शब्द में—'है।')
- बच्चे खेल रहे हैं। (क्रिया—एक से अधिक शब्दों में—'खेल रहे हैं।')

कुछ वाक्यों में एक से अधिक क्रियाएँ भी आ सकती हैं। एक उदाहरण देखिए—

ईशान होमवर्क करके सो गया।

इसमें दो क्रियाएँ हैं—'होमवर्क करना' और 'सोना'। ऐसा क्यों? इस वाक्य को हम दूसरे ढंग से भी लिख सकते हैं—

ईशान ने होमवर्क किया और वह सो गया।

वास्तव में इस वाक्य में दो कार्य हैं—व्यक्ति पहला कार्य पूरा करके दूसरा कार्य शुरू करता है।

2. रचना या प्रयोग के आधार पर क्रिया के भेद

रचना या प्रयोग के आधार पर क्रिया के निम्नलिखित चार भेद हैं—

1. प्रेरणार्थक क्रिया—जिन क्रियाओं से पता चले कि कर्ता स्वयं काम न करके, दूसरे से काम करवाता है, उन्हें प्रेरणार्थक क्रियाएँ कहते हैं; जैसे—

(क) रजनी नौकरानी से बच्चे को सुलवाती है।

(ख) दीपक पूनम से बटन लगवाता है।

इन वाक्यों में रजनी और दीपक कर्ता हैं। ये सभी स्वयं काम नहीं करते, बल्कि नौकरानी, पूनम से काम करवाते हैं, इसलिए सुलवाती है, लगवाता है, प्रेरणार्थक क्रियाएँ हैं।

2. सहायक क्रिया—कुछ वाक्यों में एक से अधिक क्रियाएँ होती हैं जिनमें एक क्रिया मुख्य होती है। उसके अर्थ को स्पष्ट करने के लिए सहायक क्रियाएँ होती है; जैसे—

चौकीदार सीटी बजा रहा है।

इस वाक्य में बजाना मुख्य क्रिया है तथा रहा है सहायक क्रिया है।

(क) आलोक खाना खा चुका है।

(ख) रश्मि गीत सुन रही थी।

इन वाक्यों में खाना, सुनना मुख्य क्रियाएँ हैं तथा चुका है, रही थी सहायक क्रियाएँ हैं।

3. संयुक्त क्रिया—जब किसी वाक्य में एक से अधिक क्रियाएँ होती हैं, उन्हें संयुक्त क्रियाएँ कहते हैं; जैसे—

(क) वर्षा होने लगी।

(ख) राजीव पेड़ पर चढ़ गया।

इन वाक्यों में होने और लगी, चढ़ और गया क्रियाएँ हैं। ये सभी एक से अधिक हैं इसलिए ये संयुक्त क्रियाएँ हैं।

4. पूर्वकालिक क्रिया—मुख्य क्रिया से पूर्व होने वाली क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है; जैसे—

(क) रेनू दूध पीकर सो गई।

(ख) मैं नहाकर पढ़ूँगा।

कुछ करके सीखें

1. सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) 'कंचन खेल रही है।' इस वाक्य में कौन-सी क्रिया है?
(i) संयुक्त (ii) सकर्मक (iii) अकर्मक

(ख) 'निकिता पढ़कर सो गई।' यह किस क्रिया का उदाहरण है?
(i) प्रेरणार्थक (ii) पूर्वकालिक (iii) सकर्मक

(ग) 'सिलवाना' शब्द में कौन-सी क्रिया है?
(i) अकर्मक (ii) संयुक्त (iii) प्रेरणार्थक

2. उपयुक्त शब्द भरकर रिक्त स्थानों को पूर्ति कीजिए—

(क) जिस शब्द या पद से किसी कार्य के करने या होने का बोध होता है, उसे ..... पद कहते हैं।
(ख) क्रिया के मूल रूप को ..... कहते हैं।
(ग) कर्म की दृष्टि से क्रिया के ..... भेद होते हैं— ..... और ..... ।
(घ) जिन क्रियापदों में कर्म नहीं होता है, उन्हें ..... क्रिया कहते हैं।

3. नीचे लिखी क्रियाओं की धातु लिखिए—

(क) चलना .....
(ख) उड़ना .....
(ग) तैरना .....
(घ) देखना .....
(ङ) पढ़ना .....
(च) लिखना .....

4. नीचे लिखे वाक्यों में क्रिया सकर्मक है अथवा अकर्मक? पहचानकर सही (✓) **का चिह्न लगाइए—**

(क) वसुधा ने पतंग उड़ाई। *सकर्मक / अकर्मक*
(ख) चाची जी सो गईं। *सकर्मक / अकर्मक*
(ग) सभी लोगों ने झण्डा लहराया। *सकर्मक / अकर्मक*
(घ) मैंने बस्ते में पुस्तकें रखीं। *सकर्मक / अकर्मक*
(ङ) बस चली गई। *सकर्मक / अकर्मक*

5. नीचे लिखे वाक्य पढ़कर क्रियाएँ छाँटकर उनके भेद भी लिखिए—

वाक्य	क्रियाएँ	भेद
(क) मुकुल पढ़कर सो गया।	.....	.....
(ख) पिता जी ने मेरी किताब देखी।	.....	.....
(ग) आवाज़ सुनकर सारी चिड़ियाँ उड़ गईं।	.....	.....
(घ) मोहन ने मित्र से पत्र लिखवाया।	.....	.....
(ङ) वह तो कब का चला गया।	.....	.....

6. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) क्रिया किसे कहते हैं? उदाहरण देकर समझाइए।
(ख) रचना के आधार पर क्रिया के कितने भेद होते हैं?

9 काल
Tense

'काल' से क्रिया के होने के समय का बोध होता है।

इन चित्रों को देखिए—

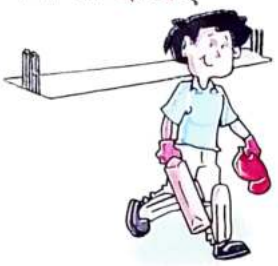

राहुल खेल रहा था।

नमन स्कूल जा रहा है।

मनीषा मुम्बई जाएगी।

ऊपर दिए पहले चित्र में क्रिया हो चुकी है, दूसरे चित्र में क्रिया हो रही है तथा तीसरे चित्र में क्रिया अभी प्रारम्भ नहीं हुई है बल्कि आने वाले समय में होगी। इस प्रकार, इनसे हमें क्रिया के होने के समय का बोध हो रहा है।

अत: क्रिया का वह रूप जिससे पता चले कि क्रिया हो चुकी है, हो रही है या आगे होगी; उसे काल कहते हैं अर्थात् काल क्रिया होने के समय का बोध कराता है।

काल के बदलने पर क्रिया के रूप में भी परिवर्तन आ जाता है।

काल के भेद

आपने देखा, ऊपर दिए पहले चित्र में क्रिया हो चुकी है, दूसरे में हो रही है तथा तीसरे में होनी है। क्रिया के इन्हीं आधारों पर काल के तीन भेद होते हैं—1. भूतकाल, 2. वर्तमानकाल, 3. भविष्यत्काल।

1. भूतकाल—क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय में किसी कार्य के समाप्त होने का बोध हो, उसे भूतकाल कहते हैं; जैसे—

हमने लालकिला देखा था।

मैं अपने गाँव गया था।

इन दोनों वाक्यों में क्रिया का बीते हुए समय में होने का बोध हो रहा है। अत: ये भूतकाल के उदाहरण हैं।

2. वर्तमानकाल—क्रिया के जिस रूप से चल रहे समय में किसी कार्य के करने या होने का बोध हो, उसे वर्तमानकाल कहते हैं; जैसे—

निकिता चित्र बना रही है।

बच्चे कार्टून फिल्म देख रहे हैं।

इन दोनों वाक्यों से पता चलता है कि क्रिया चल रहे समय (वर्तमान) में हो रही है। अत: ये वर्तमानकाल के उदाहरण हैं।

3. भविष्यत्काल—क्रिया के जिस रूप से आने वाले समय में किसी कार्य के करने या होने का बोध हो, उसे भविष्यत्काल कहते हैं; जैसे—

ईशान अपनी मम्मी के साथ बाज़ार जाएगा।

मैं कल क्रिकेट खेलूँगा।

इन दोनों वाक्यों में क्रिया का आने वाले समय में होने का बोध हो रहा है। अत: ये भविष्यत्काल के उदाहरण हैं।

1. सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) 'काल' से क्रिया के किस रूप का बोध होता है?

(i) रीति (विधि) (ii) स्थान (iii) समय

(ख) काल के कितने भेद होते हैं?

(i) दो (ii) तीन (iii) चार

(ग) 'सम्भव है वर्षा हो जाए।' इस वाक्य में कौन-सा काल है?

(i) भूतकाल (ii) भविष्यत्काल (iii) वर्तमानकाल

(घ) 'तुम पढ़ते तो पास हो जाते।' यह किस काल का उदाहरण है?

(i) भूतकाल (ii) भविष्यत्काल (iii) वर्तमानकाल

2. रिक्त-स्थान काल के भेदों के नाम से भरिए—

(क) जो क्रिया भविष्य में होगी, उसे ..... की क्रिया कहते हैं।

(ख) क्रिया का वह रूप जिससे पता चले कि काम पूर्ण हो चुका है, वह ..... की क्रिया कहलाती है।

(ग) जिस काल में क्रिया हो रही होती है, वह क्रिया ..... की क्रिया कहलाती है।

3. स्तम्भ 'क' के स्तम्भ 'ख' से सही मिलान कीजिए—

स्तम्भ 'क'	स्तम्भ 'ख'
गाड़ी समय पर	रही है।
बादल आसमान में	कर रहा है।
काजल नाच	चल पड़ी।
शेर शिकार	गरज रहे हैं।

4. नीचे दिए गए वाक्यों में काल बताइए—

(क) हम कल फिल्म देखने जाएँगे। ..... *भविष्यत्काल* .....

(ख) उमा ने पौधे खरीदे थे। .....

(ग) मीता चिट्ठी लिख रही है। .....

(घ) शौर्य अपने मामा के घर जाएगा। .....

(ङ) ईशान चार बजे खेलने जाता है। .....

(च) बच्चा माँ की गोद में सो गया। .....

5. नीचे दिए गए वाक्यों को निर्देशानुसार बदलकर दोबारा लिखिए—

(क) नमन को उसके दादा जी ने उपहार दिया। *(भविष्यत्काल*

(ख) निकिता समय पर विद्यालय पहुँचेगी। *(वर्तमानकाल*

(ग) क्रिकेट विश्व कप दक्षिण अफ्रीका में आयोजित होगा। *(भूतकाल*

(घ) मैंने चाय पी। *(वर्तमानकाल*

(ङ) अगर तुम परिश्रम करोगे तो अवश्य सफल होगे। *(भूतकाल*

(च) भारत बन्द के कारण कल बाज़ार बन्द थे। *(भविष्यत्काल*

6. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) काल किसे कहते हैं?

(ख) काल के कितने भेद हैं? प्रत्येक का उदाहरण दीजिए।

(ग) भविष्यत्काल किसे कहते हैं?

10

अव्यय / अविकारी शब्द
Indeclinable Words

आप पढ़ चुके हैं कि कुछ शब्दों के रूप लिंग, वचन, कारक आदि के कारण बदलते हैं; जैसे—संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया। परन्तु कुछ ऐसे भी शब्द हैं, जिनके रूप नहीं बदलते; जैसे—

वह प्रतिदिन मन्दिर जाती है।

यात्री पेड़ के नीचे सोया है।

सावधानी से चलो वरना गिर जाओगे।

ओफ़! कितनी गर्मी है?

आप देख सकते हैं कि इन वाक्यों के रंगीन शब्दों—प्रतिदिन, के नीचे, वरना तथा ओफ़ में किसी तरह का बदलाव या विकार नहीं हो रहा है, ये हमेशा एक ही रूप में रहते हैं। इसीलिए इस प्रकार के शब्दों को अव्यय या अविकारी शब्द कहते हैं।

अव्यय के भेद

अव्यय के चार भेद होते हैं—1. क्रियाविशेषण, 2. सम्बन्धबोधक, 3. समुच्चयबोधक, 4. विस्मयादिबोधक।

1. क्रियाविशेषण (Adverb)

जो शब्द क्रिया के काल, स्थान, रीति आदि की विशेषता बताते हैं, उन्हें क्रियाविशेषण कहा जाता है; जैसे—

बच्चे बाहर खेल रहे हैं।

अध्यापिका अभी-अभी आई हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में बाहर और अभी-अभी शब्द क्रिया की विशेषता बता रहे हैं।

क्रियाविशेषण अव्यय चार प्रकार के होते हैं—

(क) कालवाचक क्रियाविशेषण—ये क्रियाविशेषण कार्य-व्यापार के होने के समय की सूचना देते हैं।

वह **कल** यहाँ आया था। *(परसों, आज, अभी)*

वह **हमेशा** रोता रहता है। *(सदा, अक्सर, कभी-कभी)*

मैं **रोज़** व्यायाम करता हूँ। *(आजकल, प्रतिदिन)*

दो दिन से **लगातार** बारिश हो रही है। *(बराबर)*

काल या समयवाचक क्रियाविशेषण के लिए प्रश्नवाचक शब्द है 'कब'। ''अगले हफ़्ते, इन दिनों, एक घण्टे बाद, दस बजे, दो साल पहले'' आदि कालवाचक क्रियाविशेषण पदबन्ध हैं।

(ख) स्थानवाचक क्रियाविशेषण—ये क्रियाविशेषण कार्य-व्यापार के होने के स्थान की सूचना देते हैं।

बच्चे **अन्दर** खेल रहे हैं। *(बाहर, ऊपर, नीचे)*

अस्पताल **आगे** है। *(पीछे, पास, दूर, सामने)*

तुम **वहाँ** मत बैठो। *(यहाँ)*

वह लड़का **इधर** ही गया है। *(उधर)*

स्थानवाचक क्रियाविशेषण के लिए प्रश्नवाचक शब्द हैं 'कहाँ, किधर'। ''चारों ओर, घर में, हर जगह, यहाँ-वहाँ'' आदि स्थानवाचक क्रियाविशेषण पदबन्ध हैं।

(ग) रीतिवाचक क्रियाविशेषण—ये क्रियाविशेषण कार्य-व्यापार का तरीका, गुण, प्रकार आदि की सूचना देते हैं।

तरीका : घोड़ा **तेज़** दौड़ रहा है। *(धीरे-धीरे, जल्दी, अच्छा)*

गुण : उसने **ध्यानपूर्वक** पत्र पढ़ा। *(लगन से)*

प्रकार : वह **रोते-रोते** बाहर आया। *(हँसते हुए, दौड़कर)*

रीतिवाचक क्रियाविशेषण के लिए प्रश्नवाचक शब्द है 'कैसे'। ''चाकू से, सावधानी से, ठीक ढंग से'' आदि रीतिवाचक क्रियाविशेषण के पदबन्ध हैं।

(घ) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण—ये क्रियाविशेषण, कार्य-व्यापार में क्रिया के परिमाण (मात्रा) की सूचना देते हैं।

तुम **बहुत** बोलते हो। वह **थोड़ा** शरमाई।

बच्चा **बहुत** रोया। तुम **खूब** आए।

इन क्रियाविशेषणों के लिए हम 'कितना' से प्रश्न कर सकते हैं।

कुछ करके सीखें

1. उपयुक्त क्रियाविशेषण शब्द भरकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—
   (क) खरगोश ..... दौड़ता है।
   (ख) मैं ..... घूमने जाता हूँ।
   (ग) शिवानी ..... गई है?
   (घ) दादी माँ ..... चलती हैं।

   किधर
   धीरे-धीरे
   प्रतिदिन
   तेज़

2. वाक्यों से क्रियाविशेषण छाँटकर उनके भेद लिखिए—

	वाक्य	क्रियाविशेषण	भेद
(क)	हम शादी में खूब नाचे।	.....	.....
(ख)	बच्चे बाहर खेल रहे हैं।	.....	.....
(ग)	वह रोते-रोते सो गया।	.....	.....
(घ)	तुम मुम्बई कब जाओगे?	.....	.....

3. उपयुक्त शब्द भरकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—
   (क) हमेशा एक ही रूप में रहने वाले शब्दों को ..... शब्द कहते हैं।
   (ख) क्रियाविशेषण शब्द ..... की विशेषता बताते हैं।
   (ग) जो शब्द क्रिया के काल, स्थान, रीति आदि की विशेषताएँ बताते हैं, उन्हें ..... कहते हैं।
   (घ) क्रियाविशेषण अव्यय ..... प्रकार के होते हैं।

4. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए—
   (क) अविकारी शब्द किसे कहते हैं?
   (ख) अविकारी शब्द के भेद बताइए तथा उन्हें उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए।
   (ग) क्रियाविशेषण से आप क्या समझते हैं? उदाहरण भी दीजिए।

2. सम्बन्धबोधक (Preposition)

जो अविकारी शब्द किसी संज्ञा या सर्वनाम का वाक्य के अन्य शब्दों के साथ सम्बन्ध प्रकट करते हैं, उन्हें **सम्बन्धबोधक** कहते हैं; जैसे—

लालकिले **के ऊपर** राष्ट्रीय ध्वज फहरा रहा है।

हैदर **के साथ** ईशान स्कूल जा रहा है।

इन वाक्यों में रंगीन शब्द सम्बन्धबोधक हैं। ये संज्ञा शब्दों के बाद प्रयुक्त हुए हैं और वाक्य के अन्य शब्द साथ सम्बन्ध प्रकट कर रहे हैं।

कुछ अन्य वाक्य प्रयोग देखिए—

(क) पेड़ के नीचे गाय घास चर रही है।

(ख) घर के बाहर कुत्ता भौंक रहा है।

(ग) मेज़ के ऊपर पुस्तकें रखी हैं।

(घ) भूख के मारे बच्चा रोने लगा।

इन वाक्यों में रंगीन शब्द सम्बन्धबोधक अविकारी पद हैं।

कुछ करके सीखें

1. रिक्त सम्बन्धबोधक शब्दों से रिक्त स्थान भरिए—

(क) परिश्रम ..... सफलता नहीं मिलती। *(के रहित/के सहित/के साथ/के बि*

(ख) फुटबॉल घर ..... नहीं खेलना चाहिए। *(के साथ/के अन्दर/ के बाहर/के नीचे*

(ग) यमुना आगरा ..... बहती है। *(के अन्दर/के बाहर/के पास/से दू*

(घ) मनुष्य को चींटी ..... मेहनत करनी चाहिए। *(के अनुसार/की तरफ़/की तरह/के प्रका*

2. वाक्यों में से सम्बन्धबोधक शब्दों को छाँटकर लिखिए—

(क) राहुल के पास बहुत सारे गुब्बारे हैं। .....

(ख) मैंने पतंग की तरफ़ हाथ बढ़ाया। .....

(ग) निक्की दादा जी के पीछे चल रही थी। .....

(घ) पेड़ के नीचे गाय बैठी थी। .....

3. सम्बन्धबोधक अव्यय क्या कार्य करते हैं? स्पष्ट कीजिए।

3. समुच्चयबोधक (Conjunction)

दो या दो से अधिक शब्दों (पदों) या वाक्यों को जोड़ने वाले शब्द को समुच्चयबोधक या योजक श कहते हैं; जैसे—

निकिता पढ़ रही है और उसकी माँ खाना बना रही है।

मैं बीमार था इसलिए स्कूल नहीं गया

इन वाक्यों में 'और' तथा 'इसलिए' शब्द दो शब्दों या दो वाक्यों को जोड़ने का काम कर रहे हैं। अत: ये शब्द समुच्चयबोधक हैं।

आइए, इनके बारे में और जानें—

और	मैंने सेब खरीदे और करिश्मा ने केले खरीदे।	*(तथा, एवं)*
कि	मैंने कहा था कि आँधी आएगी।	
लेकिन	उसने राखी भेजी थी लेकिन शुभम को नहीं मिली।	*(किन्तु, परन्तु)*
इसलिए	ठण्ड बहुत ज्यादा है इसलिए स्कूल की छुट्टी हो गई।	
क्योंकि	राहुल पेड़ पर नहीं चढ़ा क्योंकि वह बहुत ऊँचा था।	
न-न	हीरा के पास न तो पेन्सिल है और न ही रबड़।	

कुछ अन्य समुच्चयबोधक शब्द ये हैं—वरना, बल्कि, तो, अथवा, चूँकि, अगर, यदि, तभी, मगर, ताकि आदि।

1. नीचे दिए गए अनुच्छेद में आए समुच्चयबोधक अव्ययों को रेखांकित कीजिए—

चन्दा और नन्दा छुपन-छुपाई खेल रही थीं। चन्दा ने नन्दा से कहा कि तुम मुझे खोजना। नन्दा ने चन्दा को बहुत खोजा लेकिन वह नहीं मिली। चन्दा पेड़ के पीछे जाकर छिप गई थी इसलिए नन्दा उसे देख नहीं पाई। दोनों घर के अन्दर भागीं क्योंकि बारिश आ गई थी। इस खेल में न तो चन्दा जीती और न ही नन्दा।

2. नीचे लिखे वाक्यों में समुच्चयबोधक शब्दों से रिक्त स्थान भरिए—

(क) तुमने कहा था ..... मैं कहानी सुनाऊँगा। *(की/कि)*

(ख) सेठ जी के पास ढेर सारा पैसा है ..... वह बहुत कंजूस हैं। *(लेकिन/इसलिए)*

(ग) तुम्हें सज़ा नहीं ..... पुरस्कार मिलना चाहिए। *(वरना/बल्कि)*

(घ) बिल्ली सारा दूध पी गई ..... वह बहुत भूखी थी। *(क्योंकि/इसलिए)*

(ङ) राजीव ..... संजय भाई-भाई थे। *(या/और)*

(च) अगर मेहनत करोगे ..... पास हो जाओगे। *(तो/पर)*

3. समुच्चयबोधक अथवा योजक किसे कहते हैं?

4. विस्मयादिबोधक (Interjection)

जो शब्द आश्चर्य, खुशी, घृणा, दु:ख, प्रशंसा, इच्छा आदि भावों को प्रकट करते हैं, उन्हें विस्मयादिबोधक कहते हैं; जैसे—

शाबाश! तुमने बहुत अच्छा काम किया।

हाय! मेरा पर्स।

इन वाक्यों में 'शाबाश!' से प्रसन्नता (हर्ष) तथा 'हाय!' से दु:ख (शोक) व्यक्त हो रहा है। अत: विस्मयादिबोधक अव्यय हैं।

ध्यान रखें—विस्मयादिबोधक शब्दों के बाद विस्मयादिबोधक चिह्न (!) अवश्य लगाया जाता है।

मन के प्रमुख भाव और उनके लिए प्रमुख विस्मयादिबोधक शब्द इस प्रकार हैं—

	मन के भाव	विस्मयादिबोधक शब्द
1.	प्रसन्नता	वाह-वाह!, ओह!, क्या खूब!, अहा!, बहुत अच्छे!
2.	विस्मय, आश्चर्य	ओह!, ओ हो!, अरे!, बाप रे!
3.	पीड़ा, शोक	हाय!, उफ़!, हाय राम!, आह!
4.	प्रोत्साहन, प्रशंसा	शाबाश!, वाह!, बहुत सुन्दर!
5.	क्रोध	अरे!, चुप!
6.	चेतावनी	सावधान!, होशियार!, बचो!, खबरदार!
7.	घृणा	छी!, धिक!, धत!, ओफ़!
8.	सम्बोधन	हे राम!, हे माँ!, अजी!

विशेष—विस्मयादिबोधक शब्दों से आश्चर्य, हर्ष, शोक, घृणा आदि भाव तो अवश्य प्रकट होते हैं, परन्तु इनका सम्बन्ध वाक्य या उसके किसी शब्द से नहीं होता। ये केवल मन के भाव को प्रकट करते हैं।

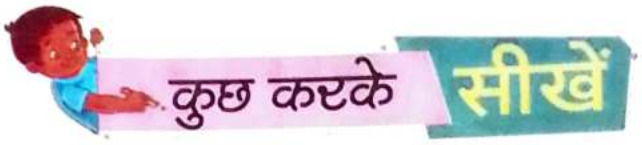

1. सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) दो शब्दों, शब्दांशों या वाक्यों को जोड़ने वाले शब्द क्या कहलाते हैं?

(i) सम्बन्धबोधक ◯ (ii) समुच्चयबोधक ◯ (iii) विस्मयादिबोधक ◯

(ख) 'माता जी बाहर गई हैं।' यह वाक्य किस अविकारी शब्द का उदाहरण है?

(i) क्रियाविशेषण ◯ (ii) सम्बन्धबोधक ◯ (iii) समुच्चयबोधक ◯

(ग) 'ईशान बाज़ार की ओर गया है।' इस वाक्य में कौन-सा अव्यय है?

(i) क्रियाविशेषण ◯ (ii) समुच्चयबोधक ◯ (iii) सम्बन्धबोधक ◯

(घ) 'उफ़!' शब्द से मन का कौन-सा भाव प्रकट होता है?

(i) पीड़ा ◯ (ii) आश्चर्य ◯ (iii) प्रशंसा ◯

2. सही विस्मयादिबोधक शब्दों से वाक्य पूरे कीजिए—

काश! *अरे!* *उफ़!* *शाबाश!* *वाह!* *ओह!*

(क) ..... इतनी बड़ी छिपकली मैंने पहली बार देखी है।

(ख) ..... मेरा तो सिर दु:ख रहा है।

(ग) ..... तुमने बहुत सुन्दर चित्र बनाया है।

(घ) ..... तुम्हें तो चोट लग गई।

(ङ) ..... तुमने तो कमाल कर दिया।

(च) ..... आज ऐसा हो पाता।

3. नीचे लिखे वाक्यों में सही अव्ययों का प्रयोग कीजिए—

(क) ..... कैसा सुहावना मौसम है।

(ख) चुपचाप बैठो ..... चले जाओ।

(ग) पेड़ ..... बन्दर बैठा है।

(घ) हम पार्क में नहीं खेल सकते ..... बारिश हो रही है।

(ङ) मेहनत ..... कोई काम नहीं हो सकता।

4. विस्मयादिबोधक शब्द मन के किन-किन भावों को प्रकट करते हैं?

विराम-चि
Punctuation Mar

'विराम' का अर्थ होता है—रुकना। बोलते समय अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए या किसी बात पर बल देने के लिए कुछ देर रुका जाता है।

इस अनुच्छेद को पढ़िए—

"तुम कितने बजे आओगे?" माँ ने पूछा। नमन ने कहा, "सात बजे। क्यों?" माँ ने कहा, "ज़रा बाज़ार जाकर घर का सामान लाना है।" "अच्छा, माँ! मैं आ जाऊँगा। क्या-क्या चीज़ें लानी हैं?" माँ बोली, "यह तो कल ही बता दिया था न। चीनी, चावल, दालें सब तो चाहिए होंगे।" "ठीक है, लाऊँगा।"

इस अनुच्छेद को आपने एक साँस में तो पढ़ा नहीं होगा। आप पढ़ते समय कई जगह रुके होंगे। लिख बात को पढ़ते या बोलते हुए कुछ देर रुकने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग करते हैं, उन्हें विराम-चिह्न कहते हैं।

विराम-चिह्नों की उपयोगिता

1. विराम-चिह्न प्रयोग से भाषा में स्पष्टता तथा अर्थ में सौन्दर्य आ जाता है।
2. वाक्य के पढ़ने या बोलने में लहजे या लय का संकेत देने के लिए यह महत्त्वपूर्ण है।

हिन्दी में प्रयुक्त प्रमुख विराम-चिह्न निम्नलिखित हैं—

1. पूर्ण विराम (।)—प्रत्येक वाक्य के पूर्ण होने पर पूर्ण विराम (।) का प्रयोग किया जाता है—

मेरा नाम ईशान है। मेरा घर शास्त्री नगर में है।

2. अर्ध विराम (;)—इसका अर्थ है—आधा विराम। एक तरह के कई छोटे वाक्यों को एक बड़े वाक्य में जोड़ने के लिए हम इसका प्रयोग कर सकते हैं—

हम जूट के थैले बनाते हैं; कूड़े से खाद बनाते हैं और फटे-पुराने कागज़ से फिर कागज़ बनाते हैं

3. अल्प विराम (,)—इसका अर्थ है—थोड़ा विराम। इसका प्रयोग निम्नलिखित सन्दर्भों में होता है—

(क) एक वाक्य के भीतर आने वाले शब्दों को अलग करने के लिए—

मैंने केले, चीकू, आम और सेब खरीदे।

(ख) 'हाँ', 'नहीं', 'बस' आदि से वाक्य जोड़ने के लिए—

हाँ, कल मैं अवश्य आ जाऊँगा।

4. प्रश्नवाचक चिह्न (?)—यह चिह्न प्रश्नों के अन्त में लिखा जाता है।

(क) कुछ प्रश्न प्रश्नवाचक शब्दों (क्या, कब, क्यों, कहाँ, कितने, कैसे आदि) से बनते हैं—

तुम्हारा क्या नाम है?　　तुम कहाँ जा रही हो?

(ख) कुछ प्रश्न 'क्या' से शुरू होते हैं, जिनका उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' में दिया जाता है। ऐसे प्रश्नों को हम 'क्या' छोड़कर भी लिख सकते हैं—

क्या तुम्हारे पास स्कूटर है?　　तुम्हारे पास घड़ी है?

5. विस्मयादिबोधक चिह्न या विस्मय चिह्न (!)—इसका प्रयोग मन के भावों को प्रकट करने वाले वाक्यों के साथ होता है। इसके निम्नलिखित सन्दर्भ हैं—

(क) उद्‌गार वाली उक्तियों के साथ—

घृणा—छि!, थू!　　प्रशंसा—वाह!, शाबाश!

आश्चर्य—अरे!　　दु:ख—हाय!

(ख) विस्मय वाले वाक्यों के लिए—

कितना सुन्दर घर है!　　क्या अद्‌भुत दृश्य है!

6. निर्देशक चिह्न (—)—निर्देशक चिह्न का प्रयोग आगे आने वाले विवरण को संकेतित करने के लिए किया जाता है—

(क) इसका प्रयोग वाक्य के अन्त में दिए गए उदाहरणों से पहले होता है—

लिंग दो प्रकार के होते हैं—पुल्लिग और स्त्रीलिंग।

(ख) बातचीत में कथन के लिए—

गड़रिया—बचाओ, बचाओ! भेड़िया-भेड़िया!

7. योजक चिह्न (-)—दो शब्दों को जोड़ने के लिए योजक चिह्न का प्रयोग किया जाता है। इस चिह्न की लम्बाई बहुत छोटी होती है—

जीवन में हार-जीत तो होती ही रहती है।　　वह धीरे-धीरे चल रहा था।

8. उद्धरण चिह्न ('···' / "···")—इकहरे उद्धरण चिह्न ('···') का प्रयोग किसी अक्षर, शब्द, किताब, उक्ति तथा उपाधि का नाम लिखने के लिए होता है—

मैंने बोर्ड पर एक शब्द लिखा—'माँ'।

दोहरे उद्धरण चिह्न ("···") का प्रयोग किसी के कहे हुए पूरे वाक्य को ज्यों-का-त्यों दिखाने के लिए होता है—

अध्यापक ने बताया, "पृथ्वी गोल है।"

कुछ करके सीखें

1. अधूरे वाक्य को पूरा कीजिए—
   - (क) किसी वाक्य के पूरा होने पर .... का प्रयोग होता है।
   - (ख) .... के अन्त में प्रश्न-चिह्न लगाया जाता है।
   - (ग) दो शब्दों को जोड़ने के लिए .... का प्रयोग किया जाता है।
   - (घ) वाक्य में प्रयुक्त पद-विशेष को स्पष्ट करने के लिए .... का प्रयोग करते हैं।

2. नीचे कुछ विराम-चिह्न दिए गए हैं। उनके नाम लिखिए—

;	....	—	....
?	....	,	....
-	....	!	....

3. उपयुक्त विराम-चिह्न लगाकर पुनः लिखिए—
   - (क) उसने मुझसे पूछा तुम दिल्ली कब जा रहे हो
   - (ख) वहाँ लालकिले के अलावा कुतुबमीनार इण्डिया गेट जन्तर-मन्तर राष्ट्रपतिभवन बिड़ला मन्दिर जामा मस्जिद आदि स्थल देखने योग्य हैं
   - (ग) भरत पैरों में गिरकर बोला भाई मुझे क्षमा करना
   - (घ) मैं उसकी सहायता अवश्य करता पर मैं बाहर गया हुआ था
   - (ङ) छि:-छि: यहाँ तो बहुत गन्दगी है

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—
   - (क) जहाँ वाक्य में हमें थोड़ा रुकना पड़े, वहाँ कौन-से चिह्न का प्रयोग किया जाता है? एक उदाहरण के द्वारा स्पष्ट कीजिए।
   - (ख) किस प्रकार के वाक्यों के अन्त में पूर्ण विराम लगता है?

5. विस्मयादिबोधक चिह्न का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित भावों से एक-एक वाक्य बनाइए—

   घृणा खुशी सम्बोधन शोक

....

....

....

....

12

वाक्य-विचार
Syntax

शब्दों का अपना अर्थ होता है, लेकिन इनको बिना किसी क्रम के अलग-अलग बोलने से वक्ता का पूरा अभिप्राय स्पष्ट नहीं हो पाता; जैसे— • चढ़ हैं में लोग बस रहे।

इनसे यह समझ नहीं आता कि क्या कहा जा रहा है। इन्हें इस प्रकार होना चाहिए— • लोग बस में चढ़ रहे हैं।

इस प्रकार, किसी बात/विचार को पूर्ण रूप से प्रकट करने वाले सार्थक शब्दों के व्यवस्थित और क्रमबद्ध समूह को वाक्य कहते हैं।

वाक्य के दो अंग होते हैं—1. उद्देश्य (Subject) और 2. विधेय (Predicate)।

वाक्य में जिसके बारे में कुछ कहा जाए, वह उद्देश्य होता है। उद्देश्य के बारे में जो कुछ कहा जाए, वह विधेय होता है; जैसे—

उपर्युक्त वाक्य में लोग (उद्देश्य) के बारे में कहा जा रहा है कि वे बस में चढ़ रहे हैं (विधेय)।

वाक्यों का वर्गीकरण

वाक्यों का वर्गीकरण दो आधारों पर किया जाता है—

(क) रचना के आधार पर तथा (ख) अर्थ के आधार पर।

(क) रचना के आधार पर—इस आधार पर वाक्य तीन प्रकार के होते हैं—

1. सरल वाक्य—जिस वाक्य में एक उद्देश्य और एक विधेय हो वह सरल वाक्य होता है; जैसे—लड़के क्रिकेट खेल रहे हैं।

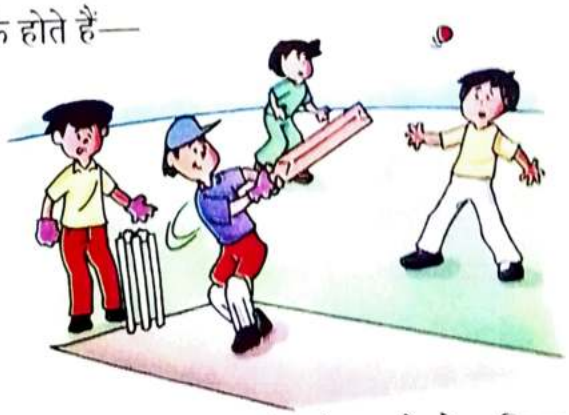

2. संयुक्त वाक्य—समान स्तर के दो या दो से अधिक सरल वाक्य जुड़ने पर संयुक्त वाक्य बन जाता है; जैसे—प्रात:काल हुआ और चिड़ियाँ उड़ गईं।

3. मिश्र वाक्य—मिश्र वाक्य में एक मुख्य उपवाक्य और एक या अधिक गौण या आश्रित उपवाक्य होते हैं; जैसे—अध्यापिका ने बताया कि कल छुट्टी रहेगी।

(ख) अर्थ के आधार पर— अर्थ के आधार पर वाक्य आठ प्रकार के होते हैं—

1. विधानवाचक वाक्य—इन वाक्यों में किसी व्यक्ति, वस्तु अथवा स्थिति के बारे में सामान्य जानकारी मिलती है; जैसे—

सूर्य पूर्व दिशा में उगता है। हाथी जंगल में रहता है।

2. प्रश्नवाचक वाक्य—इन वाक्यों में प्रश्न सम्बन्धी जानकारी मिलती है; जैसे—

क्या तुम्हारे पास साइकिल है? गणतन्त्र दिवस कब मनाया जाता है?

3. आज्ञावाचक वाक्य—इन वाक्यों में काम करने का आदेश या निर्देश दिया जाता है; जैसे—

तुम जाकर पढ़ाई करो। एक गिलास दूध लाओ।

4. निषेधवाचक वाक्य—इन वाक्यों में काम के न होने या न कर पाने का पता चलता है; जैसे—

मैं यह चित्र नहीं बना सकती। मैंने आज होमवर्क नहीं किया।

5. इच्छावाचक वाक्य—इन वाक्यों में वक्ता की शुभकामना, आशीर्वाद आदि का पता चलता है; जैसे—

तुम्हारी यात्रा मंगलमय हो। ईश्वर तुम्हें दीर्घायु करे।

6. सन्देहवाचक वाक्य—इन वाक्यों में किसी कार्य के होने के बारे में सन्देह प्रकट किया जाता है; जैसे—

शायद कल मैं विद्यालय न आऊँ। माता जी शायद कल सुबह तक आ जाएँ।

7. संकेतवाचक वाक्य—ये वाक्य कार्य की सफलता/असफलता की ओर संकेत करते हैं; जैसे—

यदि परिश्रम करते, तो अवश्य सफल होते। यदि खाना नहीं खाओगे, तो सेहत कैसे बनेगी?

8. विस्मयादिबोधक वाक्य—इन में आश्चर्य, खुशी, दु:ख आदि के भाव व्यक्त होते हैं; जैसे—

अरे! तुम तो कक्षा में प्रथम आ गए। वाह! भारत ने क्या शानदार जीत पाई।

कुछ करके सीखें

1. सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) 'मेरा भाई पुस्तक पढ़ रहा है।' इस वाक्य में उद्देश्य क्या है?

(i) मेरा भाई (ii) पुस्तक (iii) पढ़ रहा है

(ख) 'आप इस विषय में सोचिए और मुझे बताइए।' यह किस प्रकार का वाक्य है?

(i) सरल (ii) संयुक्त (iii) मिश्र

(ग) अर्थ के आधार पर वाक्य कितने प्रकार के होते हैं?

(i) छः (ii) सात (iii) आठ

(घ) 'ईश्वर तुम्हें दीर्घायु करे।' यह किस प्रकार का वाक्य है?

(i) आज्ञावाचक (ii) इच्छावाचक (iii) विधानवाचक

2. नीचे लिखे वाक्यों के उद्देश्य और विधेय अलग-**अलग करके लिखिए—**

	उद्देश्य	विधेय
(क) मेरे काले कुत्ते ने चोर का पीछा किया।	.....	.....
(ख) विभा कल स्कूल नहीं जाएगी।	.....	.....
(ग) एक छोटा बच्चा गुब्बारे उड़ा रहा था।	.....	.....
(घ) तुम थोड़ी देर बाहर बैठो।	.....	.....
(ङ) वह तोता पेड़ पर बैठा है।	.....	.....

3. रचना के आधार पर वाक्यों के भेद लिखिए—

(क) अब्दुल कलाम बच्चों से बहुत प्रेम करते थे। .....

(ख) मैं घर जाऊँगा और पढ़ाई करूँगा। .....

(ग) मेरी वह कमीज़ कहाँ है, जो नीले रंग की थी? .....

(घ) माँ ने मुझसे पूछा कि घर कब लौटोगे? .....

4. अर्थ के आधार पर निम्नलिखित वाक्यों के भेद लिखिए—

(क) माली आज काम नहीं करेगा। .....

(ख) यदि आप पढ़ते तो उत्तीर्ण हो जाते। .....

(ग) क्या आप नहा चुके हैं? .....

(घ) निकिता पुस्तक पढ़ रही है। .....

(ङ) तुम बाज़ार जाओ। .....

(च) अरे! तुम जीत गए। .....

5. निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार बदलकर लिखिए—

(क) निकिता गा रही है और नाच रही है। *(सरल वाक्य)*

(ख) ईशान ने घर आकर गृहकार्य पूरा किया। *(संयुक्त वाक्य)*

(ग) धन आने पर अभिमान हो जाता है। *(मिश्र वाक्य)*

(घ) वर्षा होने पर फ़सल अच्छी होगी। *(संकेतवाचक)*

(ङ) तुम विजय प्राप्त करो। *(इच्छावाचक)*

(च) यह मीनार बहुत ऊँची है। *(विस्मयादिबोधक)*

13

शब्द भण्डार
Vocabulary

1. पर्यायवाची शब्द (Synonyms)

भाषा में प्रत्येक शब्द अर्थ व्यक्त करता है। कुछ शब्द समान या एक जैसा ही अर्थ प्रकट करते हैं। इन्हें हम समानार्थी या पर्यायवाची शब्द कहते हैं। तत्सम शब्दों के उच्चारण में परिवर्तन होने पर उनसे तद्भव शब्द बन गए। इस कारण तत्सम और तद्भव एक दूसरे के पर्याय हैं, जैसे अग्नि, रात्रि, अन्धकार, निद्रा क्रमशः आग, रात, अँधेरा, नींद आदि।

नीचे दिए गए वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और समझिए

- हमारे स्कूल के सामने एक वृक्ष लगा हुआ था।
- एक यात्री आया और उस पेड़ के नीचे बैठ गया।

ऊपर दिए गए वाक्यों में वृक्ष के लिए पेड़ शब्द का भी प्रयोग किया गया है। हम एक ही प्राणी या वस्तु को कई नामों से पुकार सकते हैं। इससे उनके अर्थ में कोई परिवर्तन (बदलाव) नहीं आता। ये शब्द एक दूसरे के समान या पर्याय होते हैं।

नीचे हिन्दी के कुछ प्रमुख पर्यायवाची शब्द दिए गए हैं। इन्हें पढ़िए और पर्याय सीखिए—

मूल शब्द	पर्यायवाची शब्द
अँधेरा	अन्धकार, तम, तिमिर
आँख	नेत्र, नयन, लोचन, चक्षु
आकाश	नभ, गगन, व्योम, आसमान
आग	अग्नि, पावक, अनल, ज्वाला
अमृत	पीयूष, सुधा, अमिय
असुर	दैत्य, दानव, राक्षस, निशाचर
ईश्वर	प्रभु, परमात्मा, ईश, भगवान
इन्द्र	शचिपति, सुरेश, देवराज
इच्छा	अभिलाषा, कामना, आकांक्षा, चाह
कपड़ा	वस्त्र, वसन, परिधान, पट, अम्बर

घर	गृह, सदन, भवन, निकेतन
चाँद	चन्द्रमा, शशि, इन्दु, सुधांशु
दिन	दिवस, वार, वासर, दिवा
देवता	सुर, देव, अमर
कमल	पद्म, जलज, पंकज, कंज, अरविन्द, नीरज
तालाब	सर, सरोवर, ताल, तड़ाग
धरती	पृथ्वी, भू, भूमि, धरा, वसुन्धरा
पर्वत	पहाड़, भूधर, गिरि, अचल, नग
पुष्प	कुसुम, सुमन, फूल, प्रसून, गुल
पुत्र	सुत, आत्मज, नन्दन, तनुज
पक्षी	खग, विहग, नभचर, अण्डज
बिजली	चंचला, चपला, विद्युत, सौदामनी
भौंरा	भ्रमर, मिलिन्द, अलि, मधुप
बादल	मेघ, जलद, जलधर, घन, वारिद, घटा
राजा	नृप, भूप, महीप, भूपति, नृपति
रात	निशा, यामिनी, रजनी, रात्रि
वायु	हवा, पवन, समीर
वृक्ष	पेड़, द्रुम, तरु, विटप, पादप
शरीर	काया, तन, देह, कलेवर
शत्रु	अरि, रिपु, वैरी, विरोधी, दुश्मन
सोना	स्वर्ण, कनक, हेम, सुवर्ण
सिंह	शेर, केसरी, हरि, मृगपति, व्याघ्र
साँप	सर्प, नाग, भुजंग, विषधर, व्याल
सूर्य	दिनकर, भास्कर, रवि, सूरज, दिवाकर, भानु
स्त्री	नारी, महिला, कान्ता, रमणी, वामा, वनिता
स्वर्ग	देवलोक, सुरलोक, अमरपुरी, दिव
छात्र	शिष्य, विद्यार्थी, अन्तेवासी

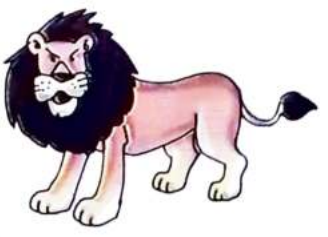

कुछ करके सीखें

1. नीचे लिखे वाक्यों के खाली स्थानों को भरिए—

(क) समान अर्थ वाले शब्दों को ..... शब्द कहते हैं।

(ख) अमृत के दो पर्याय हैं ..... और ..... ।

(ग) निशा और रजनी ..... के पर्याय हैं।

(घ) ..... और ..... घर के पर्याय हैं।

2. प्रत्येक चित्र के नीचे दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए—

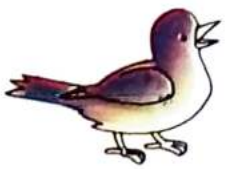

....

....

3. जो पर्याय नहीं है, उस पर घेरा (◯) लगाइए—

(क)	पक्षी	—	खग	विहग	चील
(ख)	दिन	—	दिवस	दिशा	वार
(ग)	सूर्य	—	रवि	दिनकर	राशि
(घ)	वायु	—	हवा	पवन	हेम
(ङ)	बादल	—	घन	नभ	मेघ

2. विलोम शब्द (Antonyms)

कुछ शब्द एक-दूसरे का उलटा/विपरीत अर्थ देते हैं। इन शब्दों को विपरीतार्थक या विलोम श कहते हैं। ये शब्द संज्ञा, विशेषण या क्रिया हो सकते हैं।

यहाँ कुछ विलोम शब्द दिए जा रहे हैं। इन्हें पढ़िए, समझिए तथा याद कीजिए— 1.

शब्द	विलोम शब्द
अच्छा	बुरा
अमृत	विष
आदान	प्रदान

शब्द	विलोम शब्द
अनुकूल	प्रतिकूल
आदि	अन्त
आदर	निरादर

शब्द	विलोम शब्द
आयात	निर्यात
आय	व्यय
उन्नति	अवनति
उदय	अस्त
कोमल	कठोर
क्रय	विक्रय
जय	पराजय
तीव्र	मन्द
दुर्गुण	सद्गुण
प्रातः	सायं
निडर	डरपोक
निरर्थक	सार्थक
निर्बल	सबल
पाप	पुण्य
पुरातन	नवीन
सुगन्ध	दुर्गन्ध

शब्द	विलोम शब्द
आकाश	पाताल
आधुनिक	प्राचीन
उतार	चढ़ाव
उत्थान	पतन
कुपुत्र	सुपुत्र
गुण	दोष/अवगुण
जीवन	मरण
ठण्डा	गरम
देश	विदेश
धनी	निर्धन
लोक	परलोक
वीर	कायर
शकुन	अपशकुन
सस्ता	महँगा
प्रशंसा	निन्दा
पण्डित	मूर्ख

प्रायः अधिकांश शब्दों में 'अ' या 'अन्' जोड़कर विलोम शब्द बनाए जा सकते हैं; जैसे—

हिंसा	—	अहिंसा	सत्य	—	असत्य
धर्म	—	अधर्म	ज्ञान	—	अज्ञान
उचित	—	अनुचित	एकता	—	अनेकता
उपस्थिति	—	अनुपस्थिति	अर्थ	—	अनर्थ

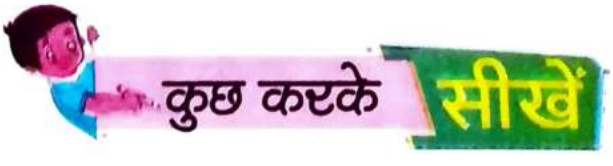

1. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए—

उन्नति	.....	उत्थान	.....
अज्ञान	.....	आधुनिक	.....
मन्द	.....	उचित	.....
स्वाधीनता	.....	अनर्थ	.....

2. रंगीन शब्दों के विलोम शब्द रिक्त स्थानों में लिखिए—

(क) जयपुर में गरमी थी, पर शिमला में .....।

(ख) वह चाय तो ..... पीता है पर दूध गर्म।

(ग) कृष्ण ने कहा—हे अर्जुन, हानि- ..... , जीवन- ..... की चिन्ता मत करो।

(घ) जो विषय मुझे ..... लगता है, वह ईशान के लिए सरल है।

(ङ) गुलामी की चुपड़ी रोटी से ..... की सूखी रोटी भली।

(च) आप प्रश्न पूछिए, मैं ..... दूँगा।

3. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द (One Word Substitution)

हम दूसरों से अपने भाव और विचार व्यक्त करने के लिए अनेक शब्दों का प्रयोग करते हैं। कभी हम शब्द-समूह के स्थान पर केवल एक शब्द का प्रयोग करते हैं। कम शब्दों में बात कहना भी कला है। इससे भाषा सुन्दर और प्रभावशाली हो जाती है।

नीचे दिए गए वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़िए—

मेरी दादी भगवान में बहुत विश्वास रखती हैं।

मेरी मम्मी रोगियों का इलाज करती हैं।

दोनों वाक्यों में आपने देखा कि बात को अधिक शब्दों में कहा गया है और इन वाक्यों को दोब लिखते समय बात को संक्षिप्त रूप में कहने के लिए—

भगवान में बहुत विश्वास रखने वाली के लिए — आस्तिक

रोगियों का इलाज करने वाली के लिए —डॉक्टर

शब्दों का प्रयोग किया जा सकता है और ऐसा करने से वाक्यों का अर्थ भी नहीं बदलेगा; जैसे—

मेरी दादी आस्तिक हैं। मेरी मम्मी डॉक्टर हैं।

इसे अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग करना कहते हैं।

यहाँ इसी प्रकार के शब्द दिए गए हैं। इन्हें पढ़िए और याद कीजिए—

शब्द-समूह	एक श
1. जो कभी मरता न हो	अ
2. जिसका कोई मूल्य न हो	अम

	शब्द-समूह	एक शब्द
3.	सारे जीवन, जीवन भर	आजीवन
4.	विदेशों से माल मँगवाना	आयात
5.	काम से जी चुराने वाला	कामचोर
6.	मिट्टी के बर्तन बनाने वाला	कुम्हार
7.	आकाश को छूने वाला	गगनचुम्बी
8.	जहाँ चार रास्ते मिलते हों	चौराहा
9.	जल में रहने वाले जीव-जन्तु	जलचर
10.	स्त्री-पुरुष का जोड़ा	दम्पती
11.	जिसे ईश्वर पर विश्वास न हो	नास्तिक
12.	जिसे कोई डर न हो	निडर
13.	देश से बाहर माल भेजना	निर्यात
14.	जो दूसरों का उपकार करता हो	परोपकारी
15.	जिसका भाग्य बहुत अच्छा हो	भाग्यशाली
16.	जो अधिक बोलता हो	वाचाल
17.	सौ वर्ष का समय	शताब्दी
18.	अपने देश का	स्वदेशी
19.	सदा सत्य बोलने वाला	सत्यवादी
20.	सप्ताह में एक बार होने वाला	साप्ताहिक

कुछ करके सीखें

1. नीचे लिखे वाक्यांशों का एक शब्द से मिलान कीजिए—

(क)	सप्ताह में होने वाला	वाचाल
(ख)	जिसे किसी का डर न हो	परोपकारी
(ग)	ईश्वर को न मानने वाला	साप्ताहिक
(घ)	अधिक बोलने वाला	निडर
(ङ)	जो दूसरों पर उपकार करता हो	नास्तिक

2. निम्नलिखित शब्दों का अर्थ विस्तार करके लिखिए—

(क) आयात — .....

(ख) निर्यात — .....

(ग) गगनचुम्बी — .....

(घ) दम्पती — .....

(ङ) जलचर — .....

3. निम्नलिखित वाक्यों में रंगीन शब्दों के लिए एक शब्द का प्रयोग करते हुए वाक्य दोबारा लिखिए—

(क) अंजलि काम से जी चुराती है। .....

(ख) रमन मिट्टी के बर्तन बनाता है। .....

(ग) मधु सदा सत्य बोलती है। .....

(घ) गोपाल का भाग्य बहुत अच्छा है। .....

(ङ) सचिन दूसरों पर उपकार करता है। .....

(च) मछली और मगरमच्छ जल पर विचरण करने वाले जन्तु हैं।

4. अनेकार्थी शब्द (Polynyms)

जिन शब्दों के एक से अधिक अर्थ होते हैं, वे अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं। ऐसे शब्दों का अर्थ वाक्य प्रयोग से ही ज्ञात होता है।

कुछ उदाहरण देखिए—

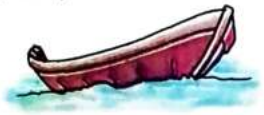

जल → पानी = ठण्डा जल लाओ।

जल → जलना = लकड़ी जल रही है।

कुछ अनेकार्थी शब्द अर्थ और प्रयोग सहित देखिए—

शब्द	अर्थ	वाक्य-प्रयोग
अम्बर	आकाश	अम्बर पर सूर्य चमक रहा है।
	कपड़ा	कृष्ण पीताम्बर पहनते थे।
हार	माला	हार पहनाकर स्वागत करो।
	पराजय	भारत से पाकिस्तान हार गया।
भाग	भागना (क्रिया)	यहाँ से भागकर कहाँ जाओगे?
	हिस्सा	खेत के दो भाग कर दिए गए।
वार	आक्रमण	कृष्ण ने कंस पर वार किया।
	दिन	रविवार को अवकाश होता है।
पट	दरवाज़ा	मन्दिर के पट बन्द हो गए।
	कपड़ा	रेशम का पट कहाँ मिलेगा?
घट	कम (घट गया)	बाढ़ घट रही है।
	घड़ा	मिट्टी का घट टूटेगा ही।

कर	हाथ	मैंने माँ के कर-कमलों में फूल पकड़ाया।
	टैक्स	हमें सरकार का कर ज़रूर देना चाहिए।
कल	बीता हुआ या आने वाला कल	मैं कल लौट आऊँगा।
	मशीन	देख लो, सभी कल-पुर्जे ठीक हैं।
पद	पैर	भाग्य से महात्माओं के पद हमारे गाँव में पड़े।
	ओहदा	इस पद पर किसे नियुक्त किया है?
काल	समय	प्राचीनकाल की सभ्यता अद्‌भुत थी।
	मृत्यु	तुम्हारा काल आया है क्या?
कुल	जोड़	तुम्हें कुल कितने रुपये चाहिए?
	वंश	राम के कुल में लव-कुश पैदा हुए।

कुछ अन्य अनेकार्थी शब्द देखिए—

शब्द		अर्थ
अंक	—	गिनती, नाटक का एक खण्ड, गोद।
अर्थ	—	धन, अभिप्राय।
अन्तर	—	भेद, हृदय, दूरी, शेष।
उत्तर	—	एक दिशा, जवाब।
गुरु	—	शिक्षक, बड़ा, बृहस्पति।
तीर	—	किनारा, बाण।
दल	—	समूह, पत्ता, टुकड़ा।
पत्र	—	चिट्ठी, पत्ता।
पानी	—	जल, रस, चमक, कलई, प्रतिष्ठा।
फल	—	खाने के फल, परिणाम, भाले की नोक।
मान	—	आदर, नाप-तौल।
योग	—	जोड़, मिलन, उपाय, नियम।
रस	—	स्वाद, सार, काव्य के नौ रस, अमृत, प्रेम।
वर	—	वरदान, दूल्हा, श्रेष्ठ।
व्यंजन	—	वर्णमाला के अक्षर, पकवान।
वर्ण	—	अक्षर, रंग, जाति।
विधि	—	ढंग, भाग्य, रीति, कानून।
सोना	—	नींद की क्रिया, एक धातु।
हरि	—	कृष्ण, शेर, बन्दर, विष्णु, इन्द्र।

कुछ करके सीखें

1. सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए

(क) कौन सा शब्द दोनों वाक्यों में आ सकता है?

एक किलो ..... । यह ..... गन्ना नहीं है।

(i) आलू (ii) आम (iii) चीनी (iv) मीठा

2. निम्नलिखित वाक्यों में बताइए कि रेखांकित शब्द किस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है?

(क) हे माँ! मेरे लाल की रक्षा कीजिए। .....

(ख) अच्छा काम करने पर अच्छा फल मिलता है। .....

(ग) इस प्रश्न को स्वयं हल कीजिए। .....

(घ) आजकल सोना बहुत महँगा हो गया है। .....

5. श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द (Homophones)

हिन्दी में ऐसे अनेक शब्द हैं जो सुनने में एक-जैसे लगते हैं। इनके बोलने और लिखने में स्वर, व्यंजन अथवा व्यंजन का बहुत कम अन्तर होता है। वे लगभग समान प्रतीत होते हैं किन्तु उनके अर्थ में भिन्नता होती है। ऐसे शब्द 'श्रुतिसम भिन्नार्थक' शब्द कहलाते हैं।

कुछ उदाहरण देखिए—

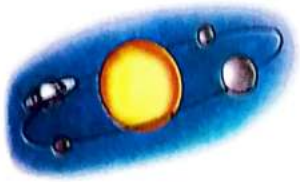

ग्रह (आकाशीय पिण्ड)

गृह (घर)

बेल (लता)

बैल (एक पशु)

आइए, इस प्रकार के कुछ शब्दों को देखिए और उनके भिन्न अर्थ को समझिए—

शब्द	अर्थ
अचार	आम, नींबू आदि का अचार
आचार	आचरण, चाल-चलन
अनल	आग

शब्द	अर्थ
कपट	धोखा
कपाट	दरवाज़ा, किवाड़
कोष	खज़ाना

शब्द	अर्थ
अनिल	वायु
अपेक्षा	उम्मीद, आशा
उपेक्षा	अनादर, तिरस्कार
आदि	आरम्भ
आदी	अभ्यस्त
उपमान	समान वस्तु
अपमान	निरादर
अभिराम	सुन्दर
अविराम	बिना रुके
असमान	जो बराबर न हो
आसमान	आकाश
उपयुक्त	ठीक
उपर्युक्त	ऊपर कहा गया
ओर	तरफ
और	तथा, अन्य, दूसरा
कलि	कलह, कलियुग
कली	फूल की कली
कुल	जोड़, योग, वंश
कूल	किनारा
शोक	दु:ख
शौक	रुचि
सुत	बेटा
सूत	सारथी

शब्द	अर्थ
कोश	शब्दकोश
कड़ाई	सख्ती
कढ़ाई	सूई-धागे से कपड़े पर फूल-पत्ती बनाना
कड़ाही	एक प्रकार का बर्तन
खान	खदान
ख़ान	मुसलमान पठान शासकों की उपाधि
तरणि	सूर्य
तरणी	नौका
तरुणी	युवती
दिशा	तरफ
दशा	हालत
दिन	दिवस
दीन	गरीब
नीर	पानी
नीड़	घोंसला
निधन	मृत्यु
निर्धन	गरीब
परिमाण	मात्रा, नाप-तौल
परिणाम	नतीजा
इस्तरी	प्रेस
स्त्री	महिला
वात	हवा
बात	वार्ता

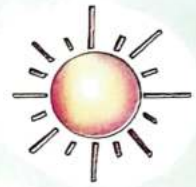

कुछ करके सीखें

1. निम्नलिखित समरूप शब्दों का अर्थ लिखकर उनका अन्तर बताइए

(क) ओर	....	और
(ख) कुल	....	कूल
(ग) दिन	....	दीन
(घ) अनल	....	अनिल
(ङ) आदि	....	आदी
(च) गृह	....	ग्रह

2. कोष्ठक में दिए शब्दों में से सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए—

(क) व्यक्ति को अपनी .... के अनुसार खर्च करना चाहिए। (आय

(ख) रोगी को .... लेने में तकलीफ़ हो रही है। (सांस

(ग) आज .... दो घण्टे देर से आएगी। (गाड़ी

(घ) डॉक्टर साहब .... गए हुए हैं। (बाहर,

(ङ) हमारा .... बहुत उन्नति कर रहा है। (परदेश, प्र

3. नीचे दिए गए चित्रों के लिए उचित शब्द चुनकर लिखिए—

(कढ़ाई, कड़ाई)

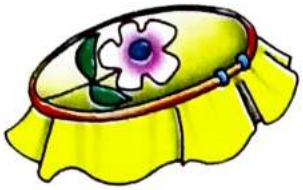

(नीर, नीड़)

(परिमाण, परिणाम)

4. निम्नलिखित शब्दों से उदाहरण के अनुसार वाक्य बनाइए—

उदाहरण— योग्य : मेरे योग्य कोई सेवा हो तो बताइए।
योग : दस और पाँच का योग पन्द्रह होता है।

(क) वात ....

बात ....

(ख) दिशा ....

दशा ....

14

मुहावरे
Idioms

भाषा में मुहावरों का बड़ा महत्त्व होता है। मुहावरे भाषा में आकर्षण और चमत्कार पैदा करते हैं, जिससे भाषा रोचक और प्रभावशाली हो जाती है। मुहावरे अपने अन्दर किसी विशेष अर्थ को समेटे हुए होते हैं। इनकी सहायता से गम्भीर भावों को भी सरल ढंग से व्यक्त किया जा सकता है। इस प्रकार, विशेष अर्थ देने वाला वाक्यांश मुहावरा कहलाता है। मुहावरों का भाव शब्दों से भिन्न होता है।

नीचे दिए मुहावरों को पढ़िए और समझिए—

आँखों में धूल झोंकना — धोखा देना

दुकानदार ने कम वस्तु तोलकर अमित की आँखों में धूल झोंक दी।

मुँह में पानी आना — ललचाना

समोसों को देखकर निकिता के मुँह में पानी आ गया।

इन मुहावरों को भी पढ़िए और समझिए—

1. **आँखें खुलना** — सच्चाई का पता चलना

   रमन के बारे में सच्चाई जानकर शोभित की आँखें खुल गईं।

2. **जल-भुन जाना** — ईर्ष्या करना

   मनु के हाथ में नया खिलौना देखकर बंटी जल-भुन गया।

3. **खून खौलना** — गुस्सा होना

   चूहों ने मेरी सारी किताबें कुतर डालीं। यह देखकर मेरा खून खौल उठा।

4. **अँगूठा दिखाना** — मना कर देना

   जब मैंने सुहास से पेंसिल माँगी तो उसने अँगूठा दिखा दिया।

5. **कान खोलकर सुनना** — सावधान होना

   कान खोलकर **सुन लो**, अब तुम्हारी चालाकी नहीं चलेगी।

6. **जी चुराना** — काम में मन न लगाना
सपना लिखाई के काम से हमेशा जी चुराती है।

7. **लाल-पीला होना** — बहुत गुस्सा होना
निधि को झूठ बोलते देखकर उसके पिता जी लाल पीले हो गए।

8. **फूला न समाना** — बहुत प्रसन्न होना
कक्षा में प्रथम आने पर शालिनी फूली न समाई।

9. **गले का हार होना** — बहुत प्यारा होना
अंजलि तो अपनी दादी जी के गले का हार है।

10. **चेहरा खिल उठना** — प्रसन्न होना
बुआ जी के घर आने पर ईशान का चेहरा खिल उठा।

11. **बाग़-बाग़ होना** — प्रसन्न होना
बच्चों का नाटक देखकर दर्शक बाग़ बाग़ हो उठे।

12. **हाथ बँटाना** — काम में मदद करना
बच्चे माँ के कामों में हाथ बँटाने लगे।

13. **उँगली उठाना** — दोष लगाना
मुझ पर उँगली मत उठाओ, मैंने तुम्हारा खिलौना नहीं लिया।

14. **कान खा जाना** — बहुत बोलना
उफ़! ये बच्चे तो कान खा जाते हैं।

कुछ अन्य मुहावरे और उनके अर्थ

1. अपनी खिचड़ी अलग पकाना — सबके साथ न चलना
2. अपने पैरों पर खड़े होना — स्वावलम्बी होना
3. अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना — अपनी प्रशंसा स्वयं करना
4. आज-कल करना — टाल-मटोल करना
5. आटे-दाल का भाव मालूम होना — सांसारिक कष्टों का अनुभव होना
6. नौ दो ग्यारह होना — भाग जाना
7. गाँठ बाँधना — अच्छी तरह याद रखना।
8. छक्के छुड़ाना — हौसला पस्त कर देना
9. छठी का दूध याद आना — घोर विपत्ति में पड़ना
10. तारे गिनना — व्याकुलता से रात बिताना
11. तारे तोड़ लाना — दुर्लभ कार्य करना
12. दाँतों-तले उँगली दबाना — आश्चर्यचकित रह जाना
13. दो-टूक कहना — साफ़-साफ़ कहना
14. पापड़ बेलना — कठिनाइयों से जूझना
15. नानी याद आना — बहुत परेशान होना

16. बन्दर घुड़की देना — मात्र डराने के लिए धमकी देना
17. फूल झड़ना — मुँह से मीठी बातें निकलना
18. मैदान मारना — जीतना
19. लोहा मानना — श्रेष्ठ समझना
20. बात बनाना — बहाना करना
21. बीड़ा उठाना — किसी काम को करने की ज़िम्मेदारी लेना
22. आसमान सिर पर उठाना — बहुत शोर मचाना

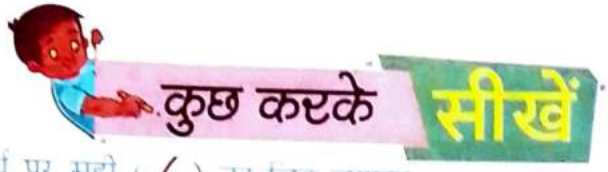

1. नीचे कुछ मुहावरों के तीन तीन अर्थ दिए गए हैं। सही अर्थ पर सही (✓) का चिह्न लगाइए—

(क) गाँठ बाँधना—

(i) रस्सी में गाँठ मारना ◯ (ii) दो चीज़ों को जोड़ना ◯ (iii) अच्छी तरह याद रखना ◯

(ख) आसमान सिर पर उठाना—

(i) आसमान पर टूट पड़ना ◯ (ii) आसमान गिर जाना ◯ (iii) बहुत शोर मचाना ◯

(ग) अपने पैरों पर खड़े होना—

(i) सड़क पर चलना ◯ (ii) कायर बनना ◯ (iii) स्वावलम्बी बनना ◯

2. सही मुहावरे का प्रयोग कर वाक्य पूरे कीजिए—

गले का हार होना *जी चुराना* *दाँतों तले उँगली दबाना* *नौ दो ग्यारह होना* *बाग़-बाग़ होना*

(क) कंचन की कविता सुनकर दर्शक .....।

(ख) अंकुर हर काम से .....।

(ग) माली को आता देखकर बच्चे .....।

(घ) पूनम अपने माता-पिता के .....।

(ङ) कुतुबमीनार को देखकर आभा ने .....।

3. उचित मुहावरा लिखकर वाक्य पूरे कीजिए—

(क) भारतीय सेना ने शत्रु-सेना के .....।

(ख) विकास को आवारा लड़कों के साथ घूमता देख पिताजी .....।

(ग) हमें काम से .....।

(घ) सरदार पटेल ने सोमनाथ के मन्दिर को बनवाने का .....।

(ङ) पुलिस को देखकर चोर .....।

15

संवाद-लेखन
Dialogue-Writing

संवाद का अर्थ है—बातचीत। हम दैनिक जीवन में एक-दूसरे से बातचीत करते हैं। बातें बताते हैं, एक-दूसरे से चीज़ों की जानकारी लेते हैं। दुकानों पर जाते हैं तो चीज़ों के दाम आदि के बारे में पूछते हैं। कक्षा में अध्यापक तुम्हें कैसे पढ़ाते हैं? वे तुमसे सवाल पूछते हैं। तुम उन्हें जवाब देते हो। तुम्हें अगर बस/रेल से कहीं जाना हो तो तुम कई प्रश्न करते हो—वह कितने बजे चलती है? किराया कितना है? आदि। सम्बन्धित अधिकारी तुम्हें उत्तर देता है। खरीदारी करना, इलाज कराना, चीज़ें ठीक कराना आदि सभी कार्यों के लिए बातचीत करना आवश्यक है।

इसी बातचीत को जब हम लिखकर दूसरों के सामने प्रस्तुत करते हैं तो वह संवाद-लेखन कहलाता है।

संवाद लिखते समय हमें कुछ महत्त्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखना चाहिए—

- संवाद छोटे एवं स्पष्ट होने चाहिए।
- भाषा सरल होनी चाहिए।
- विराम-चिह्नों का उचित प्रयोग होना चाहिए।
- संवाद विषय से सम्बन्धित होने चाहिए।

आइए, एक संवाद देखिए—

पिता और पुत्र का संवाद

पिता : राहुल, कहाँ जा रहे हो?

राहुल : खेलने जा रहा हूँ, पिताजी।

पिता : क्या तुमने विद्यालय से मिला गृहकार्य पूरा कर लिया?

राहुल : नहीं, अभी नहीं किया।

पिता : तो पहले अपना गृहकार्य करो, फिर खेलने जाना।

राहुल : पिताजी, खेलने के बाद कर लूँगा।

पिता : नहीं बेटा, पहले पढ़ लो, फिर खेलने जाना।

राहुल : अच्छा पिताजी, मैं पहले पढ़ लेता हूँ, फिर खेलने जाऊँगा।

पिता : शाबाश बेटा!

कुछ करके

1. कमल और इमरान का एक संवाद लिखिए जिसमें वे अपनी कक्षा के विद्यार्थियों के बारे में बातचीत कर रहे हैं। वे कहाँ रहते हैं? क्या खेलते हैं? कौन-कौन-सी भाषाएँ बोलते हैं? स्कूल कैसे आते हैं? आदि।

2. मान लो कि तुम बीमार हो और डॉक्टर के पास गए हो। डॉक्टर बीमारी के बारे में कुछ सवाल [illegible] डॉक्टर से दवाई लेने और खाने-पीने के बारे में प्रश्न पूछोगे। दोनों तरह के प्रश्नों को देखिए और संवाद लिखिए—

डॉक्टर के प्रश्न—बुखार है? कब से है? कितना है? गले में दर्द है? बदन में दर्द है? भूख लगती है? खाना अच्छा लगता है? फिर डॉक्टर पर्ची लिखेंगे और तुम्हें देंगे। वे आराम करने को कहेंगे।

तुम्हारे प्रश्न—दवाई कब लेनी है? खाने के बाद या पहले? क्या खा सकता हूँ/सकती हूँ? चाय-कॉफ़ी पी सकता हूँ/सकती हूँ? नहा सकता हूँ/सकती हूँ? कब स्कूल जा सकता हूँ/सकती हूँ? अन्त में तुम डॉक्टर को धन्यवाद दोगे।

3. नीचे लिखा संवाद पूरा कीजिए—

दादी और पोती के बीच संवाद *(कहानी सुनने की ज़िद करते हुए)।*

पोती : दादी! ....।

दादी : नहीं बेटा, आज नहीं, कल सुनाऊँगी।

पोती : नहीं दादी, ... सुनाइए।

दादी : अच्छा! ....?

पोती : परियों वाली ....।

दादी : अच्छा, तो सुनो।

16 कहानी-लेखन

Story-W...

'कहानी ऐसी रचना है, जिसमें जीवन के किसी अंग या किसी एक मनोभाव को प्रकट किया जाता है।'

—मुंशी ...

कहानी सुनना सभी बच्चों को अच्छा लगता है। वे घर में दादा-दादी, नाना-नानी से कहानी सुनते हैं। बच्चे कुछ कहानियाँ सुन अथवा पढ़ लेते हैं तो वे दूसरे बच्चों को कहानियाँ सुनाने में सक्षम भी हो जाते हैं। कहानी कहना और लिखना दो अलग बातें हैं, परन्तु दोनों के लिए यह आवश्यक है कि कहानी रोचक और आसानी से समझ में आने वाली हो। बच्चों को स्वयं भी कहानी लिखने का प्रयास करना चाहिए। कहानी लिखना एक कला है जिसे अभ्यास द्वारा निखारा जा सकता है। इसलिए सर्वप्रथम पहले पढ़ी हुई कहानियों को ही अपने शब्दों में लिखने का प्रयास करें।

नई कहानी लिखने में कल्पना-शक्ति का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। जो भी विषय, संकेत या चित्र आपको कहानी लिखने के लिए दिया जाए, उस पर पहले सोचिए, घटनाएँ तथा पात्र आदि को अपनी कल्पना से रूप दीजिए और कहानी लिख दीजिए।

आइए, देखें कहानी कैसे लिखें—

- पहले शीर्षक (कहानी का नाम) लिखें।
- ध्यान रहे वाक्य छोटे हों तथा भाषा सरल और रोचक हो।
- बातें/घटनाएँ क्रमशः लिखी हों।
- कहानी का अन्त स्वाभाविक और प्रभावशाली हो।
- यदि कहानी से कोई शिक्षा मिलती हो तो अन्त में लिख सकते हैं।

कहानी दो प्रकार से लिखी जाती है—

1. केवल चित्रों अथवा चित्र व सहायक शब्दों की सहायता से।
2. केवल सहायक शब्दों की सहायता से।

आओ एक कहानी पढ़ें—

महात्मा बुद्ध की शिक्षा

1. एक बार महात्मा बुद्ध भिक्षा माँगने निकले।
2. भिक्षा माँगते हुए वे एक ऐसी स्त्री के घर पहुँचे जो बहुत झगड़ालू थी।
3. उनके भिक्षा माँगने पर वह अपशब्द बोलने लगी।

4. यह सुनकर महात्मा बुद्ध शान्त भाव से खड़े रहे।
5. उन्हें शान्त देखकर उस स्त्री का क्रोध और अधिक बढ़ने लगा।
6. महात्मा बुद्ध ने प्रेमपूर्वक कहा—"माँ! आप मुझे भात दें और मैं उसे स्वीकार नहीं करूँ, तो बताइए भात किसके पास रहेगा?"
7. स्त्री हैरानी से बोली—"मेरे पास ही रहेगा।"
8. यह सुनकर महात्मा बुद्ध मुस्कराने लगे।
9. उन्होंने कहा—"इसी तरह यदि मैं आपके कहे अपशब्द न लूँ तो?"
10. यह सुनकर स्त्री बहुत शर्मिन्दा हुई और उसने महात्मा बुद्ध से क्षमा माँगी।

शिक्षा—हमें सोच-समझकर बोलना चाहिए।

अब हम एक कहानी के संकेत देते हैं। इनके आधार पर कहानी लिखिए। हाँ, चित्रों से भी कहानी लिखने में सहायता मिलेगी।

◆ जंगल में शेर ◆ जानवरों को खा जाता ◆ जानवरों और शेर में समझौता ◆ प्रतिदिन एक जानवर शेर के पास पहुँच जाता ◆ एक दिन खरगोश की बारी ◆ खरगोश देर से पहुँचा ◆ शेर ने देरी का कारण पूछा ◆ खरगोश ने रास्ते में दूसरे शेर के मिलने की बात बताई ◆ शेर ने दूसरे शेर के पास चलने के लिए कहा ◆ खरगोश शेर को कुएँ पर ले गया ◆ अपनी परछाईं देखकर शेर ने कुएँ में छलाँग लगा दी।

पहले कहानी का नाम लिखिए फिर कहानी लिखिए।

बुद्धिमान खरगोश

एक जंगल में एक शेर रहता था। वह खाने के लिए प्रतिदिन अनेक पशुओं को मार डालता था। जंगल के सभी जानवरों को अपना विनाश होते देखकर बहुत चिन्ता हुई। उन्होंने मिलकर एक सभा की तथा शेर के पास प्रतिदिन एक जानवर भेजने का फैसला किया। वे सब मिलकर शेर के पास गए और उससे भेंट स्वीकार करने की प्रार्थना की। शेर राजी हो गया। प्रतिदिन एक जानवर उसके पास भोजन के लिए जाने लगा।

एक दिन एक चतुर खरगोश की बारी आई। वह रास्ते में अपने बचाव का उपाय सोचने लगा। वह के पास जान-बूझकर बहुत देर से पहुँचा। शेर को क्रोध आ गया। उसने खरगोश से देर से आने का क पूछा। खरगोश ने कहा, "रास्ते में मुझे दूसरे शेर ने रोक लिया था वह अपने को जंगल का राजा कहता है यह सुनकर शेर का क्रोध और बढ़ गया। वह तुरन्त खरगोश के साथ दूसरे शेर को मारने चल पड़ा।

खरगोश शेर को एक गहरे कुएँ के पास ले गया। उसने शेर को पानी में उसकी परछाईं दिखाई। उ परछाईं को दूसरा शेर समझकर वह जोर से दहाड़ा। वही दहाड़ कुएँ से वापस आई। कुएँ से दहाड़ सु उसे मारने के लिए शेर तुरन्त कुएँ में कूद पड़ा। पानी गहरा था। शेर उसमें डूबकर मर गया।

इस प्रकार, बुद्धिमानी से खरगोश ने अपनी और अपने दूसरे साथियों की शेर से रक्षा की। संक समय सदैव बुद्धिमानी से कार्य करना चाहिए।

➡ चित्रों के आधार पर कहानी की रचना कीजिए—

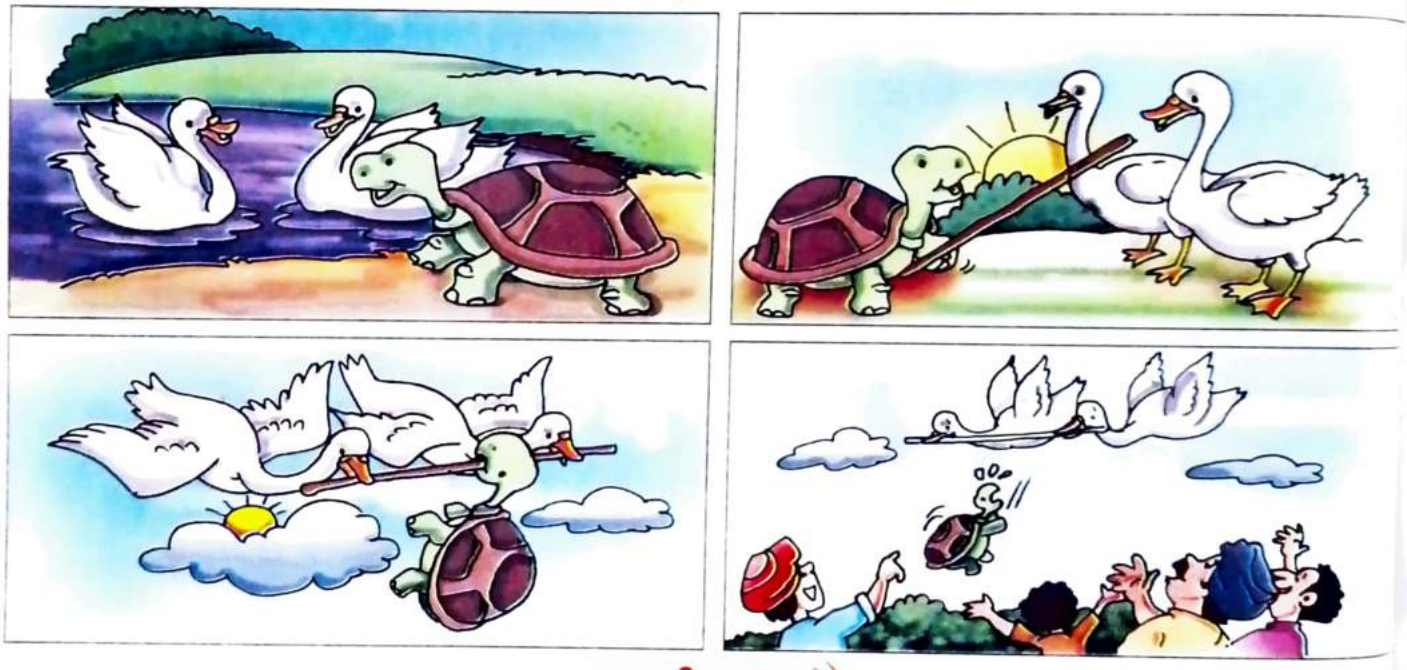

बातूनी कछुआ

किसी तालाब में एक कछुआ रहता था। दो हंसों के साथ उसकी दोस्ती थी। एक बार तालाब सू गया। हंसों ने दूसरे तालाब में जाने की सोची लेकिन कछुए को कैसे ले जाएँ? हंसों ने बहुत सोचा। आखिर हंसों को एक उपाय सूझा। कछुआ एक लकड़ी लाया। हंसों ने लकड़ी के दोनों किनारों को अपने मुँह में पक लिया। हंसों ने कछुए को समझाया कि रास्ते में बोलना मत। फिर हंस उड़ चले। कुछ देर बाद वे एक गाँव ऊपर से गुज़रे। गाँव वाले उन्हें देखने के लिए जमा हो गए। तब कछुए से न रहा गया। उसने बोलने के लि मुँह खोला। लकड़ी उसके मुँह से छूट गई और वह धड़ाम से ज़मीन पर गिर पड़ा।

सीख—ज़्यादा बोलने की आदत अच्छी नहीं है।

कुछ करके सीखें

1. नीचे कुछ चित्र तथा कहानी की मुख्य बातें दी गई हैं। इनकी सहायता से कहानी लिखिए [illegible] दीजिए—

◆ ऊँट और सियार में मित्रता ◆ दोनों नदी पार करके गन्ने के खेत में गए ◆ सियार ऊँट की पीठ पर बैठकर गया ◆ गन्ने खाकर हुआँ-हुआँ करना उसकी आदत है ◆ खेत का मालिक आ गया ◆ सियार छिप गया ◆ मालिक ने ऊँट को बहुत मारा ◆ शाम को ऊँट पर बैठकर सियार नदी पार करने लगा ◆ ऊँट ने पानी में डुबकी लगाई ◆ सियार ने मना किया ◆ ऊँट ने कहा, खाकर डुबकी लगाना उसकी आदत है ◆ सियार नदी में डूबकर मर गया।

इस कहानी को लिखकर उसके नीचे इससे मिलने वाली शिक्षा भी लिखिए।

2. नीचे दिए गए संकेतों की सहायता से कहानी पूरी कीजिए—

संकेत—एक राजा—लड़ाई में हार जाना—जान बचाने के लिए एक गुफा में घुसना—एक चींटी का दीवार पर चढ़ना—गिरना—फिर चढ़ना—फिर चढ़ना—आखिर सफलता—ऊपर पहुँचना—चींटी से सीख—राजा का फिर सेना तैयार करना—दुश्मन से लड़ना—जीतना।

एक .... था। एक बार .... गया। दुश्मन से .... छिप गया। राजा ने गुफा में एक .... । वह गुफा की दीवार .... कोशिश कर रही थी। चींटी दीवार पर .... और फिर नीचे ....। इस तरह वह कई बार .... गिरी। आखिर वह .... में सफल हो गई। राजा को चींटी .... । उसने फिर से .... और दुश्मन .... । इस बार लड़ाई में उसकी .... । सच है, जो .... करता रहता है, वह अवश्य सफल होता है।

3. दिए गए चित्रों को देखकर अपनी कल्पना के आधार पर 'लालची ब्राह्मण' की कहानी लिखिए—

4. नीचे दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर रोचक कहानी लिखिए—

एक गरीब लकड़हारा—लकड़ियाँ काटकर बाज़ार में बेचना—उन पैसों से घर चलाना—एक दिन जंगल में किनारे एक सूखा पेड़ देखना—पेड़ पर चढ़कर सूखी डालियाँ काटना—अचानक कुल्हाड़ी का हाथ से छूटकर में गिरना—दुःखी होकर लकड़हारे का रोना—नदी में से जलपरी का आना—लकड़हारे से रोने का क पूछना—लकड़हारे की कहानी सुन जलपरी द्वारा उसकी मदद करना—जलपरी का नदी में जाना और सोने कुल्हाड़ी लाकर लकड़हारे को देना—लकड़हारे द्वारा मना करना—फिर नदी में जाकर चाँदी की कुल्ह लाना—लकड़हारे द्वारा फिर मना कर देना—मेरी कुल्हाड़ी तो लोहे की थी—जलपरी द्वारा लोहे की कुल्हाड़ी पर लकड़हारे का खुश होना—लकड़हारे की ईमानदारी से खुश होकर जलपरी द्वारा उसे तीनों कुल्हाड़ियों का देना

17

पत्र-लेखन
Letter-Writing

आपसी सम्पर्क बनाए रखने का सबसे सस्ता और उत्तम साधन पत्र है। पत्र के द्वारा हम अपने सन्देश मित्रों, रिश्तेदारों, सगे-सम्बन्धियों अथवा अन्य लोगों तक बहुत आसानी से पहुँचा सकते हैं। घरों में फोन और कम्प्यूटर के आने से बच्चों और बड़ों की पत्र लिखने की आदत छूट गई है फिर भी पत्र लिखना आना चाहिए। पत्र लिखना भी एक कला है। इसके द्वारा हम अपने आन्तरिक विचारों की अभिव्यक्ति सरलता से करते हैं।

पत्र दो तरह के होते हैं—

(1) औपचारिक पत्र और

(2) अनौपचारिक पत्र।

औपचारिक पत्र के अन्तर्गत सरकारी और कार्यालयी पत्र आते हैं। अवकाश हेतु, किसी पद के लिए आवेदन, पुस्तकें मँगवाना, किसी समस्या के समाधान हेतु आदि विषयों पर औपचारिक पत्र लिखे जाते हैं।

अनौपचारिक पत्र को घरेलू या पारिवारिक पत्र भी कहा जाता है। ये पत्र मित्र, भाई, पिताजी, दादा-दादी, नाना-नानी आदि को लिखे जाते हैं। निमन्त्रण, सूचना, सन्देश आदि से सम्बन्धित पत्र अनौपचारिक पत्र के अन्तर्गत ही आते हैं।

पत्र लिखते समय ध्यान देने योग्य कुछ ज़रूरी बातें—

- पत्र लिखते समय सबसे ऊपर बाईं ओर अपना पता लिखना चाहिए।
- इसके बाद पत्र लिखने की तिथि लिखनी चाहिए।
- यदि औपचारिक पत्र लिख रहे हैं तो जिसे पत्र लिख रहे हैं, उसका सम्बोधन और पूरा पता तिथि के बाद लिखना चाहिए।
- फिर विषय लिखकर पत्र लिखने का कारण लिखिए।
- अन्त में धन्यवाद ज्ञापन के साथ अपना नाम लिखकर पत्र समाप्त करना चाहिए।
- अनौपचारिक पत्र में तिथि लिखने के बाद सम्बोधन और उसके अनुसार अभिवादन लिखना चाहिए।
- अभिवादन के बाद कुशल-मंगल पूछते हुए पत्र लिखने का कारण अथवा आवश्यक बातें लिखनी चाहिए।
- पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में, आपका पुत्र/पुत्री आदि लिखकर उसके नीचे अपना नाम लिखना चाहिए।

औपचारिक पत्र

अवकाश के लिए प्रार्थना-पत्र

दिनांक 16.12.21

सेवा में

प्रधानाचार्य महोदय

मान्यवर

सविनय निवेदन है कि कल दोपहर में विद्यालय से आने के बाद मुझे सिरदर्द महसूस हुआ। शाम को मुझे तेज बुखार हो गया। डॉक्टर को दिखाने पर उन्होंने मुझे कुछ दवाएं दीं और तीन दिन आराम का परामर्श दिया। इस कारण मैं तीन दिन तक विद्यालय नहीं आ सकूँगा। कृपया मुझे 16.12.21 से 18.12.21 तक का अवकाश प्रदान करें।

सधन्यवाद

आपका आज्ञाकारी छात्र

राहुल कुमार

8-ए

पुस्तकें मँगवाने के लिए पत्र

5, कृष्णापुरम मिर्ज़ापुर

दिनांक

सेवा में

श्रीमान व्यवस्थापक महोदय

मै. किताबघर बुक्स

A-2, झिलमिल इण्डस्ट्रियल एरिया

दिलशाद गार्डन मेट्रो स्टेशन के पीछे

दिल्ली-110095

मान्यवर

हमें निम्नलिखित पुस्तकों की आवश्यकता है कृपया इनकी एक-एक प्रति उचित कमीशन पर वी.पी.पी. द्वारा जल्दी भेजने का कष्ट करें। पुस्तकें नवीनतम संस्करण की होनी चाहिए। हम 1000 रु. भेज रहे हैं।

1. अविरल-5
2. व्याकरण सुमन भाग-5
3. The English Connection Part-V
4. Maths Challenger Part-V
5. Science Explorer Part-V
6. Evolving Earth Part-V

भवदीय,
रमन श्रीवास्तव

अनौपचारिक पत्र

3. जन्मदिन पर मित्र को शुभकामनाएँ

.....

.....

दिनांक .....

प्रिय निकिता,

कल तुम्हारा जन्मदिन है और मैं अस्वस्थ होने के कारण तुम्हारे यहाँ आ नहीं पाऊँगी। तुम्हारे दसवें जन्मदिन पर हार्दिक शुभकामनाएँ और ढेर सारा प्यार। पत्र के साथ छोटा-सा उपहार भेज रही हूँ, स्वीकार करना।

कितनी खुशी की बात है—अब बेटियों के जन्मदिन भी बेटों की तरह उत्साह से मनाए जाने लगे हैं। ईश्वर तुम्हारे आने वाले हर दिन को खुशियों से भर दे और ज़िन्दगी को सुन्दर बनाए।

अंकल-आंटी और दादा-दादी को मेरा सादर नमस्कार।

रोहन को ढेर सारा प्यार।

तुम्हारी सखी

नेहा

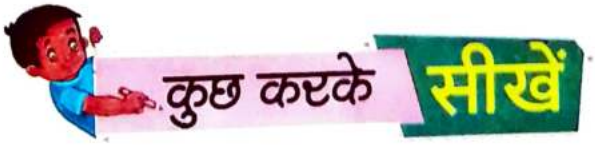

निम्नलिखित विषयों पर पत्र लिखने का अभ्यास कीजिए—

1. आप पाँचवीं कक्षा उत्तीर्ण कर लेने पर विद्यालय छोड़ने के प्रमाण-पत्र (टी०सी०) के लिए प्रधानाचार्य को प्रार्थना-पत्र लिखिए।
2. अपनी बुआ जी/चाचा जी के विवाह समारोह के कारण तीन दिन के अवकाश के लिए प्रधानाचार्य को पत्र लिखिए।
3. अपने जन्मदिन समारोह पर निमन्त्रण देते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए।
4. अपने दादा जी को गर्मियों की छुट्टियों की योजना बताते हुए पत्र लिखिए।
5. अपनी छोटी बहन को जो परीक्षा में अपने विद्यालय में प्रथम आई है, बधाई देते हुए पत्र लिखिए।